

लेखाशास्त्र

अध्याय-7: हास; प्रावधान और संचय



हास का अर्थ

हास का वर्णन हम स्थायी परिसम्पत्ति के मूल्य में स्थायी, सतत् एवं धीरे-धीरे हो रही घटोत्तरी के रूप में कर सकते हैं। यह व्यवसाय में परिसम्पत्ति की लागत के क्षीण होने पर, न कि बाज़ार मूल्य पर आधारित है।

इंस्टीट्यूट अफ कास्ट एण्ड मैनेजमेंट एकाउंटिंग, लंदन (ICMA) के अनुसार “हास पर परिसम्पत्ति के वास्तविक मूल्य में इसके उपयोग एवं/अथवा समय बीतने के कारण आई घटोत्तरी को कहते हैं।”

इंस्टीट्यूट अफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स अफ इंडिया (ICAI) द्वारा जारी लेखांकन मानक-6 ने हास की परिभाषा इस प्रकार दी है “यह, अवक्षयण योग्य परिसम्पत्ति में घिसावट, उपभोग अथवा कीमत में कोई अन्य कमी जो उपयोग, समय के व्यतीत होने अथवा तकनीक एवं बाज़ार में परिवर्तन के कारण अप्रचलित होने से हुई है का मापन है। हास का निर्धारण परिसम्पत्ति के सम्भावित उपयोगी जीवन काल में प्रति लेखांकन अवधि में हास की राशि के संतोषजनक भाग को व्यय दर्शाने के लिए किया जाता है। हास में उन सभी परिसम्पत्तियों का अपलेखन सम्मिलित होता है जिनकी जीवन अवधि पूर्व निर्धारित है”।

हास उद्यम की वित्तीय स्थिति एवं परिचालन के परिणामों के निर्धारण एवं प्रस्तुतिकरण को प्रभावित करता है। यह प्रति लेखा वर्ष अवक्षयण योग्य राशि पर लगाया जाता है। ध्यान देने योग्य है कि हास का विषय अथवा इसका आधार परिसम्पत्ति होती है:

- “जिनकी एक लेखा वर्ष से अधिक समय तक उपयोग की सम्भावना है;
- जिनका सीमित उपयोगी जीवन है;
- जिन्हें कोई भी उद्यम उत्पादन में उपयोग या वस्तु एवं सेवाओं की आपूर्ति, दूसरों को किराए पर देने या प्रशासनिक कार्यों के उपयोग के लिए रखता है न कि व्यवसाय में सामान्य रूप से बिक्री के उद्देश्य से।”

हास योग्य परिसम्पत्तियों के उदाहरण हैं - मशीन, संयंत्र, फर्नीचर, भवन, कंप्यूटर, ट्रक, वैन, उपकरण इत्यादि। इसके अतिरिक्त हास एक निर्धारित अवक्षयित राशि है, जो या तो ऐतिहासिक

लागत अथवा एतिहासिक लागत की वह पूरक राशि, घटाए गए अनुमानित अवशिष्ट मूल्य सहित हो सकती है।

हास राशि के निर्धारण में एक और ध्यान योग्य बिन्दु है 'परिसम्पत्ति का अनुमानित जीवन काल'। इसे निम्न दो बिन्दुओं की सहायता से समझाया जा सकता है (i) उद्यम द्वारा आंका गया अवक्षयण योग्य परिसंपत्ति का जीवनकाल, (ii) अन्य उद्यम द्वारा समान परिसंपत्ति से उत्पादन की मात्रा।

हास की विशेषताएँ

1. यह स्थायी परिसम्पत्तियों के पुस्तक-मूल्य का अवक्षयण है।
2. इसमें समय के बीतने, उपयोग करने अथवा प्रचलन से बाहर होने से मूल्य में हानि, सम्मिलित है। उदाहरण के लिए अप्रैल, 2017 को एक फर्म 1,00,000 रु. की एक मशीन खरीदती है। वर्ष 2018 में यही मशीन एक नये रूप में आती है परिणामस्वरूप व्यावसायिक फर्म द्वारा क्रय की गई मशीन पुरानी हो जायेगी। इसके कारण पुरानी मशीन की कीमत में कमी अप्रचलन के कारण होगी।
3. यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।
4. यह बीती हुई लागत है इसलिए कर योग्य लाभ की गणना से पूर्व इसे घटाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, हास एवं कर से पूर्व लाभ की राशि 50,000 रु. है। हास 10,000 रु. एवं कर 35% की दर से लगाया गया है। कर से पूर्व के लाभ की गणना इस प्रकार से होगी:

	(रु.)
हास एवं कर से पूर्व लाभ	50,000
(-) हास राशि कर पूर्व लाभ	<u>(10,000)</u>
कर से पूर्व लाभ	40,000

5. यह गैर रोकड़ व्यय है। इससे किसी प्रकार की रोकड़ का प्रवाह नहीं होता है। यह पहले से किये गये पूँजीगत व्यय को समाप्त करने की प्रक्रिया है।

हास एवं इससे मेल खाते शब्द

कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जैसे रिक्तीकरण एवं परिशोधन जो हास के सम्बन्ध में प्रयुक्त होते हैं। इसका कारण इनका समान लेखांकन व्यवहार है, चूंकि ये शब्द विभिन्न परिसंपत्तियों की उपयोगिता समाप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

रिक्तीकरण

रिक्तीकरण शब्द का प्रयोग प्राकृतिक साधनों को खोदकर निकालने के संदर्भ में किया जाता है जैसे खानें, खदानें इत्यादि। इससे माल अथवा परिसम्पत्ति की मात्रा की उपलब्धता घट जाती है। उदाहरण के लिए एक व्यवसायिक इकाई ने जो कि खनन का व्यापार करती है, 10,00,000 रु. की कोयले की खान खरीदी। जैसे-जैसे इस खान में से कोयला निकाला जाता रहेगा इसकी कीमत कम होती जायेगी। खान की कीमत में घटोत्तरी को रिक्तीकरण कहते हैं। रिक्तीकरण एवं मूल्य में मूल अन्तर यह है कि पहले में कुछ आर्थिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है जबकि दूसरे का सम्बन्ध किसी परिसम्पत्ति के प्रयोग से है। इसके बावजूद भी इसका परिणाम प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा का नष्ट होना व सेवा क्षमता क्षीण होना है। इसी कारणवश रिक्तीकरण एवं मूल्य का लेखांकन व्यवहार एक समान होता है।

परिशोधन

परिशोधन से अभिप्राय पेटेन्ट, कापीराइट, ट्रेडमार्क, फ्रैंचाइज, ख्याति, जिनका एक निश्चित अवधि के लिये ही उपयोग किया जाता है, मूल्य को पुस्तकों में व्यय दिखा कर समाप्त करने से है। अमूर्त परिसम्पत्ति की लागत एक भाग का अपलेखन या एक अवधि में उसको समाप्त दिखाने के लिये प्रक्रिया एक ही है। उदाहरण के लिए एक फर्म ने 10,00,000 रु. में पेटेन्ट खरीदा और यदि इसका उपयोगी जीवनकाल 10 वर्ष आंका गया है तो फर्म के लिए इस 10,00,000 रु. की राशि को 10 वर्षों में व्यय दिखाकर समाप्त करना होगा। व्यय दिखाई गई राशि तकनीकी रूप से परिशोधन कहलाती है।

हास के कारण

क्षय एवं घिसावट अथवा समय की समाप्ति के कारण मूल्य में कमी

क्षय एवं घिसावट का अर्थ है क्षमता में कमी एवं परिणामस्वरूप परिसम्पत्ति के मूल्य में गिरावट, जो इसके आय अर्जन के लिए व्यवसाय प्रचालन में उपयोग के कारण होती है। इससे परिसम्पत्ति की अपने उद्देश्य को पूरा करने की तकनीकी क्षमता कम हो जाती है। क्षय एवं घिसावट का दूसरा पहलू परिसंपत्ति का भौतिक रूप से नष्ट होना है। कुछ परिसम्पत्तियाँ मात्र समय के व्यतीत होने के साथ नष्ट होती रहती हैं जबकि उनका कोई उपयोग नहीं किया जाता है। ऐसा विशेष रूप से मौसम, हवा, बारिश आदि प्रकृति की आपदाओं के प्रभाव से होता है।

कानूनी अधिकार की समाप्ति

व्यवसाय के लिए कुछ परिसम्पत्तियों का मूल्य उनको उपयोग करने का करार, पूर्व निश्चित समय की समाप्ति पर खत्म हो जाता है। ऐसी परिसम्पत्तियों के उदाहरण हैं - पेटेन्ट, कॉपीराइट, पट्टा आदि। व्यवसाय के लिए इनकी उपयोगिता उनको प्राप्त कानूनी समर्थन के हटते ही समाप्त हो जाती है।

अप्रचलन

स्थायी परिसम्पत्तियों के हास का एक और तत्व अप्रचलन है। साधारण शब्दों में अप्रचलन का अर्थ है समयानुकूल न होना। अप्रचलन से अभिप्राय है किसी परिसम्पत्ति का पुराना हो जाना क्योंकि अब उससे और श्रेष्ठ परिसम्पत्ति उपलब्ध है। यह निम्न तत्वों के कारण पैदा होती है:

- तकनीकी परिवर्तन।
- उत्पादन पद्धतियों में सुधार।
- इन परिसम्पत्तियों के कारण उत्पादित वस्तु एवं सेवाओं की बाज़ार मांग में परिवर्तन।
- वैधानिक अथवा अन्य कोई ऐसा कारण।

असमान्य तत्व

किसी भी परिसम्पत्ति की उपयोगिता में कमी कुछ असामान्य कारकों से भी हो सकती है - जैसे आग से दुर्घटना, भूचाल, बाढ़ आदि। दुर्घटनाजन्य हानि स्थायी होती है लेकिन लगातार या क्रमिक नहीं होती। उदाहरण के लिए एक दुर्घटनाग्रस्त कार का मरम्मत के पश्चात भी बाज़ार में पहला मूल्य नहीं रहेगा यद्यपि इसको उपयोग में नहीं लाया गया है।

हास की आवश्यकता

आगम एवं लागत का मिलान

स्थायी परिसम्पत्तियों को व्यवसाय के परिचालन में उपयोग का औचित्य यही है कि इनसे आगम का अर्जन होता है। हर परिसम्पत्ति कुछ न कुछ घिसती है इसलिए इसका मूल्य कम हो जाता है। इसीलिए हास भी व्यवसाय के किसी भी अन्य दूसरे सामान्य व्यय जैसे वेतन, भाड़ा, पोस्टेज एवं स्टेशनरी आदि के समान व्यय है। यह समान अवधि के आगम पर प्रभार होता है इसीलिए इन्हें साधारण रूप से समान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धांतों (GAAP) का अनुकरण करते हुए निवल लाभ निर्धारण से पूर्व घटाना अनिवार्य होता है।

कर के लिए महत्त्व

हास करों के कारण भी घटाने के योग्य व्यय है। वैसे हास की राशि के निर्धारण के लिए कर संबंधी नियम व्यवसाय में वर्तमान में प्रचलित नियमों के समान होने आवश्यक नहीं हैं।

सत्य एवं उचित वित्तीय स्थिति

यदि परिसम्पत्ति पर हास के लिए प्रावधान नहीं किया गया है तो इसका अधि-मूल्यांकन होगा और तुलन-पत्र व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति नहीं दर्शाएगा। वैसे न तो स्थापित लेखांकन व्यवहारों और न ही कानून के विशिष्ट प्रावधान इसकी अनुमती देते हैं।

कानून का अनुपालन

कर नियमों के अतिरिक्त कुछ निश्चित अधिनियम हैं जो परोक्ष रूप से कुछ व्यावसायिक संगठनों जैसे निगमित उद्यम को स्थाई परिसम्पत्ति पर मूल्य हास के प्रावधान के लिए बाध्य करते हैं।

हास की राशि को प्रभावित करने वाले तत्व

परिसम्पत्ति की लागत

किसी परिसम्पत्ति की लागत (जिसे मूल लागत अथवा ऐतिहासिक लागत भी कहते हैं) में बीजक मूल्य एवं परिसम्पत्ति को क्रियात्मक स्थिति में लाने अथवा उपयोग के योग्य बनाने के लिए किये गये आवश्यक व्यय सम्मिलित हैं। क्रय मूल्य के अतिरिक्त इसमें भाड़ा एवं परिवहन लागत मार्ग के लिए बीमा, स्थापन लागत, पंजीयन व्यय परिसम्पत्ति के क्रय पर दिया कमीशन एवं मिलानेवाली मदें जैसे सॉफ्टवेयर आदि सम्मिलित होते हैं। यदि पुरानी परिसम्पत्ति क्रय की है तो इसमें परिसम्पत्ति को कार्य के योग्य बनाने के लिए किया गया प्रारंभिक मरम्मत व्यय सम्मिलित होता है।

लेखांकन मानक - 6 के अनुसार स्थाई परिसम्पत्ति की लागत इसकी अधिग्रहण, स्थापना, चालू करने एवं इसके साथ अतिरिक्त चीजें, अथवा अवक्षयित परिसम्पत्ति में सुधार पर किया गया कुल व्यय है। उदाहरण के लिए एक मशीन 50,000 रु. में खरीदी एवं 5,000 रु. इसके परिवहन एवं स्थापना पर व्यय किये। यहां मशीन का भौतिक मूल्य 55,000 रु. (अर्थात् 50,000 + 5,000 रु.) जिसे मशीन के उपयोगी जीवन काल में हास व्यय के रूप में समाप्त करना है।

परिसम्पत्ति की लागत

किसी परिसम्पत्ति की लागत (जिसे मूल लागत अथवा ऐतिहासिक लागत भी कहते हैं) में बीजक मूल्य एवं परिसम्पत्ति को क्रियात्मक स्थिति में लाने अथवा उपयोग के योग्य बनाने के लिए किये गये आवश्यक व्यय सम्मिलित हैं। क्रय मूल्य के अतिरिक्त इसमें भाड़ा एवं परिवहन लागत मार्ग के लिए बीमा, स्थापन लागत, पंजीयन व्यय परिसम्पत्ति के क्रय पर दिया कमीशन एवं मिलानेवाली मदें जैसे सॉफ्टवेयर आदि सम्मिलित होते हैं। यदि पुरानी परिसम्पत्ति क्रय की है तो इसमें परिसम्पत्ति को कार्य के योग्य बनाने के लिए किया गया प्रारंभिक मरम्मत व्यय सम्मिलित होता है।

लेखांकन मानक - 6 के अनुसार स्थाई परिसम्पत्ति की लागत इसकी अधिग्रहण, स्थापना, चालू करने एवं इसके साथ अतिरिक्त चीजें, अथवा अवक्षयित परिसम्पत्ति में सुधार पर किया गया कुल व्यय है। उदाहरण के लिए एक मशीन 50,000 रु. में खरीदी एवं 5,000 रु. इसके परिवहन एवं

स्थापना पर व्यय किये। यहां मशीन का भौतिक मूल्य 55,000 रु. (अर्थात् 50,000 + 5,000 रु.) जिसे मशीन के उपयोगी जीवन काल में हास व्यय के रूप में समाप्त करना है।

हास मान मूल्य

किसी परिसम्पत्ति का हास मान मूल्य इसकी लागत (जैसा बिन्दु 7.5.1 में गणना की गई है) घटा शुद्ध अवशिष्ट मूल्य (जैसे बिन्दु 7.5.2 में गणना की गई है) के बराबर होता है। अतः उपरोक्त उदाहरण में परिसंपत्ति का अवक्षयण मूल्य 45,000 रु. होगा (अर्थात् 50,000 रु. - 5,000 रु.) जिसे उसके अनुमानित जीवनकाल में बाँट दिया जाएगा। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि परिसंपत्ति के उपयोगी जीवनकाल पर प्रभारित कुल अवक्षयित राशि हास मान लागत के बराबर होनी चाहिये। यदि निर्धारित की गई अवक्षयण की कुल राशि हास मान लागत से कम है तो पूँजीगत व्यय का अव-पुनर्लाभ होगा। साथ ही यह आगम-व्यय मिलान संकल्पना का उल्लंघन होगा।

अनुमानित उपयोगी जीवनकाल

परिसम्पत्ति का उपयोगी जीवनकाल उसका अनुमानित आर्थिक अथवा वाणिज्यिक जीवनकाल होता है। इसके लिए भौतिक जीवनकाल महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि हो सकता है कि परिसम्पत्ति भौतिक रूप से अभी भी दृश्य है किन्तु यह संभव है कि वाणिज्यिक रूप से उत्पादन के योग्य न हो। उदाहरण के लिए एक मशीन का क्रय किया गया तथा अनुमान है कि इसका उपयोग उत्पादन प्रक्रिया में 5 वर्ष तक किया जायेगा। हो सकता है कि 5 वर्ष के पश्चात् भी मशीन अच्छी स्थिति में हो लेकिन उत्पादन में उसका उपयोग लाभप्रद नहीं होगा अर्थात् यदि इसको अभी भी उपयोग में लाया जाए तो हो सकता है कि उत्पादन लागत बढ़ जाए। इसीलिए इसके भौतिक जीवन काल से हटकर इसका उपयोगी जीवनकाल पांच वर्ष का होगा। परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवनकाल का अनुमान लगाना कठिन होता है क्योंकि यह अनेक कारकों पर निर्भर करता है जैसे परिसम्पत्ति के उपयोग करने का स्तर, परिसम्पत्ति का रखरखाव, तकनीकी परिवर्तन बाजार में परिवर्तन इत्यादि। लेखांकन मानक 6 के अनुसार किसी परिसम्पत्ति का जीवनकाल सामान्यतः वह अवधि होता है जिसमें उद्यम द्वारा इसका उपयोग करने की सम्भावना है। साधारणतः उपयोगी जीवनकाल भौतिक जीवनकाल से कम होता है। वैसे तो परिसम्पत्ति का उपयोगी जीवनकाल वर्षों में दिया जाता है लेकिन इसे अन्य इकाइयों

में भी दर्शाया जा सकता है जैसे उत्पादन की इकाइयां (जैसा कि खानों की दशा में) अथवा कार्य के घंटे उपयोगी जीवनकाल निम्न तत्वों पर निर्भर करता है:

- कानून अथवा प्रसंविदे द्वारा पहले से निर्धारण जैसे पट्टाधिकार परिसम्पत्ति का उपयोगी जीवनकाल पट्टे की अवधि होता है।
- परिसम्पत्ति के उपयोग हेतु निश्चित पारियों की संख्या, व्यावसायिक संगठन में मरम्मत एवं रखरखाव की नीति।
- तकनीकी रूप से अप्रचलित।
- उत्पादन पद्धति में नवीनता/सुधार।
- वैधानिक अथवा अन्य प्रतिबन्ध।

हास की राशि की गणना की पद्धतियाँ

किसी एक लेखा वर्ष में लगाई जाने वाली अवक्षयित राशि उसके हास मान एवं उसके आबंटन की पद्धति पर निर्भर करती है। इसकी दो विधियां हैं जिनको कानून ने निश्चित किया है तथा जिन्हें भारत में पेशेवर लेखांकन व्यवहार में लागू किया गया है। ये विधियां हैं सीधी रेखा विधि एवं क्रमागत विधि। इन दो मुख्य पद्धतियों के अतिरिक्त अन्य पद्धतियों भी हैं जैसे - वार्षिक वृत्ति विधि, मूल्य हास कोष पद्धति, बीमा पालिसी विधि, वर्षों के अंकों की योगविधि, दोहरी क्रमागत हास विधि जिसे अवक्षयण की राशि तय करने के लिए प्रयोग किया जाता है। उचित पद्धति का चयन निम्न पर निर्भर करता है:

परिसम्पत्ति के प्रकार;

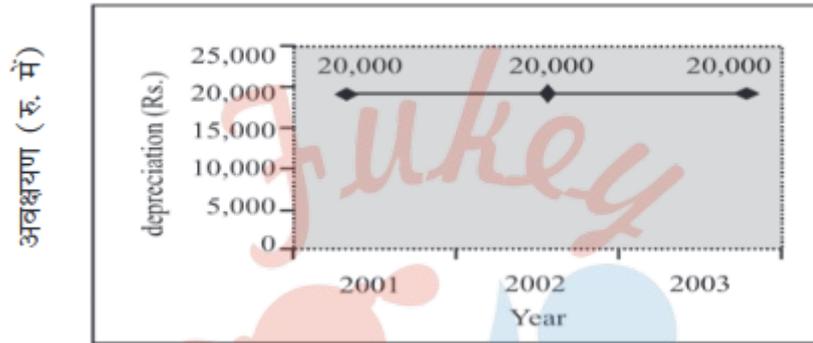
एसी परिसम्पत्ति के उपयोग की प्रकृति;

व्यवसाय में प्रचलित परिस्थितियां;

लेखांकन मानक - 6 के अनुसार चयन की गई मूल्य हास पद्धति को एक अवधि से दूसरी अवधि में समान रूप से लागू करना चाहिए। विशिष्ट परिस्थितियों में ही मूल्य हास पद्धति में परिवर्तन किया जाना चाहिए।

सीधी रेखा पद्धति

हास लगाने का यह सबसे पुरानी एवं बहुत अधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। यह पद्धति इस अवधारणा पर आधारित है कि परिसम्पत्ति अपने संपूर्ण उपयोगी जीवनकाल में समान रूप से प्रयोग की जाएगी। इसे सीधी रेखा कहते हैं क्योंकि यदि हास की राशि एवं सम्बद्ध समय को ग्राफ पर दर्शाया जाय तो यह एक सीधी रेखा बन जाएगी।



सरल रेखा विधि से अवक्षयण की राशि

इसे स्थायी पद्धति भी कहते हैं क्योंकि परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवनकाल में प्रतिवर्ष हास की राशि एक समान रहती है। इस पद्धति के अनुसार परिसम्पत्ति के जीवनकाल में प्रत्येक लेखांकन वर्ष में एक स्थिर एवं समान राशि को भार के रूप में दर्शाता है। प्रति वर्ष हास की राशि इस प्रकार से लगाई जाती है कि परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन के अन्त में इसकी मूल्य लागत घटाकर इसके अवशिष्ट मूल्य के बराबर आ जाती है। इसे मूल लागत पर स्थायी प्रतिवर्ष विधि भी कहते हैं, क्योंकि प्रतिवर्ष मूल लागत (वास्तव में हासमान लागत) को समान प्रतिशत से मूल्य हास के रूप में समाप्त किया जाता है।

इस विधि से अवक्षयण राशि की गणना निम्न सूत्र लगाकर की जाती है:

$$\text{हास} = \frac{\text{परिसम्पत्ति की लागत} - \text{अनुमानित शुद्ध अवशिष्ट मूल्य}}{\text{परिसम्पत्ति का अनुमानित जीवनकाल}}$$

सीधी रेखा विधि में हास की दर परिसम्पत्ति के कुल मूल्य का प्रतिशत होती है जिससे परिसम्पत्ति पर उपयोगी जीवनकाल में अवक्षयण के रूप में व्यय भार लगाया जाता है।

हास की दर इस प्रकार निकाली जाती है:

$$\text{हास की दर} = \frac{\text{वार्षिक हास राशि}}{\text{अधिग्रहण लागत}} \times 100$$

इस उदाहरण को देखें। परिसम्पत्ति की मूल लागत 2,50,000 रु. है तथा उपयोगी जीवनकाल 10 वर्ष एवं अवशिष्ट मूल्य का अनुमान 50,000 रु. लगाया है। प्रति वर्ष लगाई जाने वाली हास की राशि की गणना इस प्रकार की जाएगी

$$\text{वार्षिक हास राशि} = \frac{\text{परिसम्पत्ति की अधिग्रहण लागत} - \text{अनुमानित शुद्ध अवशिष्ट मूल्य}}{\text{परिसम्पत्ति का अनुमानित जीवनकाल}}$$

$$\text{अर्थात्} = \frac{2,50,000 \text{ रु.} - 50,000 \text{ रु.}}{10} = 20,000 \text{ रु.}$$

हास की दर इस प्रकार से निकाली जायेगी -

$$\text{हास की दर} = \frac{\text{वार्षिक हास राशि}}{\text{अधिग्रहण लागत}} \times 100$$

बिन्दु (i) से वार्षिक हास राशि 20,000 रु. है

अतः हास की दर

$$\text{अतः हास की दर} = \frac{20,000 \text{ रु.}}{2,50,000 \text{ रु.}} \times 100 = 8\% \text{ होगी।}$$

सीधी रेखा विधि के लाभ

सीधी रेखा विधि के कुछ लाभ हैं जो नीचे दिये गये हैं

यह बहुत सरल विधि है इसको समझना एवं इसका उपयोग सरल है इसकी सरलता के कारण व्यवहार में यह बहुत लोकप्रिय है।

परिसम्पत्ति पर हास लगाकर इसका शुद्ध अवशेष मूल्य या शून्य मूल्य पर लाया जा सकता है। इसीलिए इस विधि से सम्पत्ति के पूरे हास मान मूल्य को इसके उपयोगी जीवनकाल में बाँटना सम्भव हो पाता है।

प्रतिवर्ष लाभ-हानि खाते में एक ही राशि लिखी जाती है। इससे विभिन्न वर्षों के लाभों में तुलना करना सरल हो जाता है।

यह विधि उन परिसम्पत्तियों के लिए उचित रहती है जिसका उपयोगी जीवन का सही अनुमान लगाया जा सकता है एवं जहाँ परिसम्पत्ति के उपयोग में प्रतिवर्ष एकरूपता है जैसे पट्टे पर लिया गया भवन।

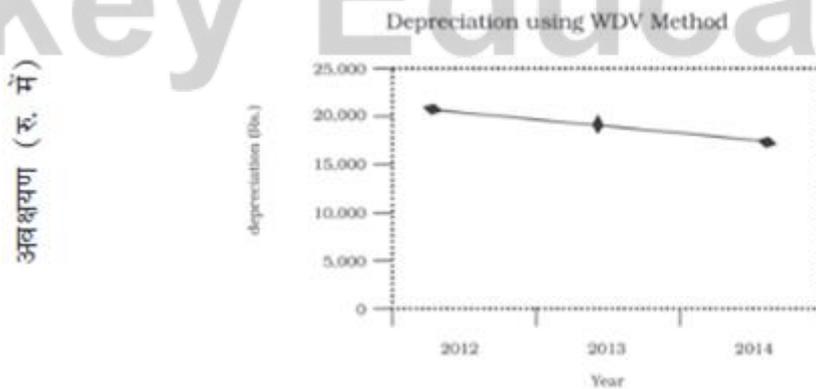
सीधी रेखा विधि की सीमाएं

यद्यपि सीधी रेखाविधि सरल होती है एवं इसको लागू करना आसान होता है फिर भी इसकी कुछ सीमाएं हैं। जो नीचे दी गई हैं:

1. यह पद्धति इस दोषपूर्ण अवधारणा पर आधारित है कि परिसम्पत्ति की उपयोगिता विभिन्न लेखा वर्षों में समान रहती है।
2. समय के साथ परिसम्पत्ति की क्षमता कम होती जाती है तथा मरम्मत एवं रखरखाव पर खर्च बढ़ता जाता है। इसीलिए इस पद्धति में लाभ पर प्रभार हास एवं मरम्मत दोनों को मिलाकर/कुल राशि परिसम्पत्ति के पूरे जीवनकाल में समान नहीं होगी बल्कि यह प्रतिवर्ष बढ़ती रहेगी।

क्रमागत पद्धति

इस पद्धति में हास परिसम्पत्ति के पुस्तक मूल्य पर प्रभार होता है। पुस्तक मूल्य लगाई गई वार्षिक हास राशि से घटता चला जाता है। इसे हासमान शेष पद्धति भी कहते हैं। इस पद्धति में हास की राशि की गणना प्रत्येक लेखांकन अवधि के प्रारम्भ में दिये गए परिसम्पत्ति के मूल्य पर पूर्व-निर्धारित अनुपात प्रतिशत से की जाती है। हास राशि प्रतिवर्ष कम होती जाती है।



क्रमागत हास मूल्य पद्धति द्वारा निकाली गई हास की राशि

उदाहरण के लिए एक परिसम्पत्ति का मूल्य 2,00,000 रु. है तथा इस पर हास क्रमागत पद्धति के अनुसार 10% प्रति वर्ष की दर से लगाया जाता है। इसमें हास की राशि की गणना इस प्रकार से की जायेगी:

$$(i) \quad \text{हास (I वर्ष)} = \frac{2,00,000 \text{ रु.} \times 10}{100} = 20,000 \text{ रु.}$$

$$(ii) \quad \text{अपलिखित मूल्य} = 2,00,000 \text{ रु.} - 20,000 \text{ रु.} = 1,80,000 \text{ रु.}$$

(I वर्ष के अन्त में)

$$(iii) \quad \text{हास (II वर्ष)} = \frac{1,80,000 \text{ रु.} \times 10}{100} = 18,000 \text{ रु.}$$

$$(iv) \quad \text{अपलिखित मूल्य} = 1,80,000 \text{ रु.} - 18,000 \text{ रु.} = 1,62,000 \text{ रु.}$$

(II वर्ष के अन्त में)

$$(v) \quad \text{III वर्ष} = 1,62,000 \text{ रु.} - 16,200 \text{ रु.}$$

$$(vi) \quad \text{अपलिखित मूल्य} = 1,62,000 \text{ रु.} - 16,200 \text{ रु.}$$

$$(III वर्ष के अन्त में) = 1,45,800 \text{ रु.}$$

जैसा कि उदाहरण से स्पष्ट है, हास की राशि प्रतिवर्ष कम होती जा रही है। इसी कारण से इसे क्रमागत हास किशत अथवा हास मान मूल्य पद्धति भी कहते हैं। यह पद्धति इस अवधारणा पर आधारित है कि व्यवसाय को होने वाला लाभ सम्पत्ति के पुराने होने के साथ घटता जाता है (देखें चित्र 7.2) इसका कारण प्रति वर्ष परिसम्पत्ति खाते के निरन्तर घटते हुए शेष पर पूर्व निर्धारित प्रतिशत से गणना करना है। इसी कारण से बाद के वर्षों की अपेक्षा आरम्भ के वर्षों में अवक्षयण भार के रूप में बड़ी राशि वसूल की जाती है।

अपलिखित मूल्य पद्धति में हास की दर की गणना निम्न सूत्र के द्वारा की जाती है:

$$R = \left[1 - n \sqrt[n]{\frac{S}{C}} \right] \times 100$$

जहाँ

R = अवक्षयण की दर

n = अनुमानित उपयोगी जीवन

s = अवशिष्ट मूल्य

c = परिसम्पत्ति की लागत

उदाहरण के लिए ट्रक की मौलिक लागत 9,00,000 रु. एवं इसके 16 वर्ष के उपयोगी जीवन काल के बाद इसका अवशेष मूल्य 50,000 रु. है तब हास की उचित दर गणना इस प्रकार से की जायेगी:

$$R = \left[1 - 16 \sqrt[16]{\frac{50,000}{9,00,000}} \right] \times 100 = (1 - 0.834) \times 100 = 16.6\%$$

क्रमागत पद्धति के लाभ

1. यह पद्धति अधिक वास्तविक अवधारणा पर आधारित है कि समय के व्यतीत होने के साथ परिसम्पत्ति से प्राप्त लाभ कम होता जाता है। इसलिए आवश्यकता लागत के उचित आबंटन की है, क्योंकि प्रारंभ के दिनों में जब परिसम्पत्ति की उपयोगिता अधिक होती है तब अधिक हास लगाया जाता है जबकि बाद के वर्षों में कम जब परिसम्पत्ति की उपयोगिता कम हो जाती है।
2. इसके कारण हास एवं मरम्मत व्यय का लाभ-हानि खाते पर प्रति वर्ष भार लगभग समान रहता है।
3. आयकर अधिनियम करावधान के लिए इस विधि को स्वीकार करता है।
4. चूंकि प्रारंभ के वर्षों में लागत का बड़ा भाग समाप्त कर दिया जाता है अतः अप्रचलन के कारण हानि कम हो जाती है।

5. यह पद्धति स्थाई परिसम्पत्तियों के यथायोग्य होती है क्योंकि यह अधिक समय तक चलती है एवं समय की समाप्ति के साथ इनकी मरम्मत एवं रखरखाव पर अधिक व्यय की आवश्यकता होती है।

क्रमागत हास विधि की सीमाएं

यद्यपि क्रमागत हास विधि अधिक वास्तविक अवधारणा पर आधारित होती है फिर भी इसकी सीमाएं हैं, जो निम्न हैं:

1. हास अपलिखित मूल्य पर निश्चित प्रतिशत से निकाला जाता है, परिसम्पत्ति की लागत को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, परिसम्पत्ति की मूल्य कमी भी शून्य नहीं हो सकती।
2. हास की उपयुक्त दर निश्चित करना कठिन हो जाता है।

सीधी रेखा एवं क्रमागत हासविधि तुलनात्मक विश्लेषण

व्यवहार में हास की राशि की गणना के लिए सीधी रेखा विधि एवं क्रमागत हास विधि का उपयोग किया जाता है। इन दो विधियों में निम्न बिन्दुओं के आधार पर अन्तर हैं:

हास लगाने के आधार

सीधी रेखा विधि में मौलिक लागत (या ऐतिहासिक लागत) पर हास लगाया जाता है जबकि क्रमागत विधि में हास लगाने का आधार वर्ष के आरंभ में शुद्ध पुस्तक मूल्य है (अर्थात् मूल लागत में से घटायी गयी वर्तमान तिथि तक की हास राशि)।

हास लगाने के आधार

सीधी रेखा विधि में मौलिक लागत (या ऐतिहासिक लागत) पर हास लगाया जाता है जबकि क्रमागत विधि में हास लगाने का आधार वर्ष के आरंभ में शुद्ध पुस्तक मूल्य है (अर्थात् मूल लागत में से घटायी गयी वर्तमान तिथि तक की हास राशि)।

हास का वार्षिक प्रभार

सीधी रेखा विधि के अन्तर्गत प्रति वर्ष अपलिखित की जानेवाली हास की राशि स्थिर अथवा समान रहती है जबकि क्रमागत हास विधि में प्रथम वर्ष में यह राशि सर्वाधिक होती है एवं बाद के वर्षों में यह घटती जाती है। इस अन्तर का कारण मूल्य हास की दोनों विधियों में अवक्षयण लगाने के आधार में अन्तर है। सीधी रेखा विधि में हास मूल लागत पर लगाया जाता है जबकि क्रमागत हास विधि में यह अपलिखित मूल्य पर लगाया जाता है।

हास एवं मरम्मत व्यय का लाभ-हानि खाते पर भार

यह विशिष्टता सभी को मान्य है कि परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवनकाल के बाद के वर्षों में मरम्मत एवं रखरखाव पर व्यय बढ़ जाते हैं। अतः सीधी रेखा विधि के अंतर्गत, परिसंपत्ति के उपयोगी जीवनकाल के बाद के वर्षों में हास और मरम्मत व्ययों के संदर्भ में लाभ-हानि खाते पर कुल प्रभार बढ़ जाता है। दूसरी ओर क्रमागत विधि में हास भार बाद के वर्षों में घटता है इसलिए हास एवं मरम्मत व्यय प्रतिवर्ष समान रहता है।

आयकर कानून मान्यता

सीधी रेखा पद्धति को आयकर कानून मान्यता नहीं देता है जबकि यह क्रमागत हास पद्धति को मान्यता देता है।

उपयुक्तता

सीधी रेखा पद्धति उन परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त रहती है जिनमें मरम्मत व्यय कम होते हैं, प्रचलन की सम्भावना भी कम रहती है तथा अवशिष्ट मूल्य अवधि पर निर्भर करता है। इसके उदाहरण हैं फ्रीहोल्ड भूमि एवं भवन, पेटेन्ट, ट्रेड मार्क आदि। क्रमागत हास पद्धति उन परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त रहती है जिन पर तकनीकी परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है तथा समय के व्यतीत होने के साथ मरम्मत व्यय बढ़ता जाता है जैसे सयंत्र एवं मशीनरी, वाहन इत्यादि।

सीधी रेखा पद्धति एवं क्रमागत हास पद्धति में तुलना

अन्तर का आधार	सीधी रेखा पद्धति	क्रमागत हास पद्धति
---------------	------------------	--------------------

1. हास लगाने का आधार	मूल लागत प्रतिवर्ष स्थिर (एक समान)	पुस्तक मूल्य (अर्थात् मूल लागत घटा आज तक की तिथि तक का हास, प्रतिवर्ष घटता है
2. वार्षिक हास	प्रतिवर्ष असमान अन्तिम वर्षों में बढ़ता है	प्रतिवर्ष लगभग समान मान्यता देता है
3. हास एवं मरम्मत की पूरी लाभ-हानि खाते पर भार	मान्यता नहीं देता है उन परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त जिनमें मरम्मत खर्च कम होता है,	उन परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त रहती है जिन पर तकनीकी परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है तथा समय व्यय बढ़ता जाता है।
4. आयकर कानून द्वारा मान्यता	अप्रचलन की सम्भावना कम रहती है तथा अवशिष्ट मूल्य उसकी अवधि पर निर्भर करता है	
5. उपयुक्तता		

हास के अभिलेखन की पद्धतियां

स्थाई परिसम्पत्तियों पर हास का लेखा पुस्तकों में अभिलेखन दो प्रकार हैं:

परिसम्पत्ति खाते पर हास का लगाया जाना

हास पर प्रावधान खाता/संचित हास खाता बनाना

परिसम्पत्ति खाते पर हास का लगाया जाना

इस व्यवस्था के अनुसार हास को परिसम्पत्ति की मूल लागत में से घटाया जाता है (परिसम्पत्ति खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है) व लाभ-हानि खाते पर भार लगाया जाता है (नाम पक्ष में लिखा जाता है)। इस विधि में रोजनामचा प्रविष्टियाँ निम्न होंगी:

- | | | | |
|-----|---|-----|--|
| 1. | परिसंपत्ति के क्रय के अभिलेखन पर
परिसंपत्ति खाता | नाम | (केवल क्रय के वर्ष में)
(स्थापना, भाड़ा व्यय सहित परिसंपत्ति की लागत) |
| | बैंक/विक्रेता के खाते से | | (नकद/उधार क्रय) |
| 2. | निम्नवत् दो प्रविष्टियाँ प्रत्येक वर्ष के अंत में की जाएंगी | | |
| (अ) | परिसंपत्ति की लागत से हास राशि घटाने पर
हास खाता | नाम | (हास राशि से) |
| | परिसंपत्ति खाते से | | |
| (ब) | हास राशि का लाभ-हानि खाते पर प्रभाव के लिए
लाभ-हानि खाता | नाम | (अवशयित राशि से) |
| | हास खाते से | | |

तुलन पत्र का व्यवहार

जब इस विधि का प्रयोग किया जाता है तब स्थायी परिसंपत्ति को तुलन पत्र के परिसंपत्ति पक्ष में शुद्ध पुस्तक मूल्य पर दर्शाया जाएगा (अर्थात् तिथि विशेष पर परिसंपत्ति को वह लागत जिसमें से हास राशि घटाई गई है) न कि वास्तविक लागत जिसे ऐतिहासिक लागत भी कहते हैं।

हास पर प्रावधान खाता/संचित हास खाता

इस विधि में परिसंपत्ति पर लगाई गई हास राशि एक अलग खाते में संचित होती है जिसे हास पर प्रावधान अथवा संचित हास कहते हैं। हास की राशि के इस प्रकार से संचयन के कारण परिसंपत्ति खाता किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होता है तथा इसे इसके उपयोगी जीवनकाल के हर आने वाले वर्षों में लागत मूल्य पर ही दर्शाया जाता है। हास के अभिलेखन की इस विधि की कुछ आधारभूत विशेषताएं हैं जो नीचे दी गई हैं:

- परिसंपत्ति खाता इसके पूरे जीवनकाल में इसे मूल लागत पर ही दर्शाता है।
- हास की राशि को प्रत्येक लेखांकन वर्ष के अन्त में परिसंपत्ति खाते में समायोजन करने के स्थान पर एक अलग खाते में समेकित किया जाता है।

इस विधि में निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाएंगी

1. परिसंपत्ति के क्रय का अभिलेखन

परिसंपत्ति खाता	नाम	(केवल क्रय वर्ष में)
बैंक/विक्रेता खाते से		(स्थापना व्ययों सहित परिसंपत्ति की लागत)
		(नकद/उधार क्रय)
2. प्रत्येक वर्ष के अंत में निम्नवत् दो प्रविष्टियाँ दी जाएंगी:
 - (अ) हास मान राशि को हास प्रावधान खाते के जमा पक्ष में लिखने पर:

हास खाता	नाम	(अवक्षयित राशि से)
हास पर प्रावधान खाते से		
 - (ब) हास का लाभ-हानि खाते पर प्रभार के लिए

लाभ-हानि खाता	नाम	(अवक्षयित राशि से)
हास खाते से		

तुलन पत्र का व्यवहार

तुलन पत्र में इसे परिसंपत्ति पक्ष की ओर मूल लागत पर दर्शाया जाएगा। तिथि विशेष तक लगाई गई हास की राशि हास प्रावधान खाते में दर्शायी जाती है जिसे या तो देयता पक्ष की ओर दर्शाया जाएगा या फिर तुलन पत्र की परिसंपत्ति पक्ष की ओर संबन्धित परिसंपत्ति के मूल लागत से घटा कर दर्शाया जाएगा।

उदाहरण 1

मै. सिंघानिया एण्ड ब्रदर्स ने 1 अप्रैल, 2016 को 5,00,000 रु. का संयन्त्र खरीदा एवं इसकी स्थापना पर 50,000 रु. व्यय किये। संयन्त्र के 10 वर्ष के उपयोगी जीवन के पश्चात अवशिष्ट मूल्य का अनुमान 10,000 रु. लगाया गया। वर्ष 2016-17 के लिये रोजनामचा में प्रविष्टि करें एवं यह मानते हुए कि हास सीधी रेखा पद्धति उधार पर लगाया गया है प्रथम तीन वर्ष का संयन्त्र खाता और हास खाता बनाएँ यदि:

- (i) लेखा पुस्तकें प्रति वर्ष 31 मार्च को बन्द की जाती हैं, एवं
- (ii) हास प्रभार के रूप में परिसंपत्ति खाते पर दर्शाया जाता है।

हल

सिंघानिया एण्ड ब्रदर्स की पुस्तकें

रोजनामचा

तिथि	विवरण	ब.पू.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2016 01 अप्रैल	संयन्त्र खाता नाम बैंक खाते से (5,00,000 रु. का संयंत्र क्रय किया)		5,00,000	5,00,000
01 अप्रैल	संयन्त्र खाता नाम बैंक खाते से (स्थापना पर किये गये व्यय)		50,000	50,000
2017 31 मार्च	हास खाता नाम संयंत्र खाते से (परिसंपत्ति पर हास लगाया)		54,000	54,000
31 मार्च	लाभ-हानि खाता नाम हास खाते से (हास की राशि लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखी गई)		54,000	54,000

संयंत्र खाते

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2016 01 अप्रैल	बैंक		5,00,000	2017 31 मार्च	हास		54,000
	बैंक		50,000		शेष आ/ले		4,96,000
	(स्थापना व्यय)		5,50,000				5,50,000
2017 01 अप्रैल	शेष आ/ला		4,96,000	2018 01 अप्रैल	हास		54,000
			4,96,000		शेष आ/ले		4,42,000
			4,96,000				4,96,000
2018 01 अप्रैल	शेष आ/ला		4,42,000	2019 31 मार्च	हास		54,000
			4,42,000		शेष आ/ले		3,88,000
			4,42,000				4,42,000
2019 01 अप्रैल	शेष आ/ला		3,88,000				

हास खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2017				2017			
31 मार्च	संयन्त्र		54,000	31 मार्च	लाभ-हानि		54,000
2018				2018			
31 मार्च	संयन्त्र		54,000	31 मार्च	लाभ-हानि		54,000
2019				2019			
31 मार्च	संयन्त्र		54,000	31 मार्च	लाभ-हानि		54,000

कार्यकारी टिप्पणी

(1) मूल लागत की गणना	(रु.)
क्रय लागत	5,00,000
जमा स्थापना लागत	50,000
मूल लागत	5,50,000
अवशिष्ट मूल्य	10,000
उपयोगी जीवनकाल	10 वर्ष

$$(2) \text{ हास मान} = \frac{5,50,000 \text{ रु.} - 10,000 \text{ रु.}}{10} = 54,000 \text{ रु. प्रति वर्ष}$$

उदाहरण 2

मै. मेहरा एण्ड संस ने 01 अक्टूबर, 2016 को एक मशीन क्रय की एवं उसके स्थापना पर 20,000 रु. प्राप्त किये। फर्म प्रतिवर्ष मूल लागत पर 10% की दर से हास लगा रही है। वर्ष 2017 के लिये आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए एवं प्रथम तीन वर्ष के मशीन खाता एवं हास खाता बनाइए यदि दिया गया है कि:

- खाता बही प्रतिवर्ष 31 मार्च बन्द की जाती है एवं
- हास प्रभार के रूप में परिसंपत्ति खाते में दर्शाया जाता है।

हल

मै. मेहरा एण्ड संस की पुस्तके

रोजनामचा

तिथि	विवरण	ब.पू.सं	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
2016 20 अक्टूबर	मशीन खाता नाम बैंक खाते से (1,80,000 रु. में मशीन खरीदी)		1,80,000	1,80,000
01 अक्टूबर	मशीन खाता नाम बैंक खाते से (स्थापना पर व्यय किये)		20,000	20,000
2017 31 मार्च	हास खाता नाम मशीन खाते से (मशीन पर हास लगाया)		10,000	10,000
2018 31 मार्च	लाभ एवं हानि खाता नाम हास खाते से (हास की राशि लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखी गई)		20,000	20,000

2019 31 मार्च	हास खाता नाम मशीन खाते से (मशीन पर हास लगाया)		20,000	20,000
31 मार्च	लाभ-हानि खाता नाम हास खाते से (हास मान की राशि लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखी गई)		20,000	20,000
31 मार्च	हास खाता नाम मशीन खाते से (मशीन पर हास लगाया)		20,000	20,000
31 मार्च	लाभ-हानि खाता नाम हास खाते से (हास राशि लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखी गई)		20,000	20,000

मशीन खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2016 01 अक्टूबर	बैंक		1,80,000	2017 31 मार्च	हास		10,000
01 अक्टूबर	बैंक (स्थापना व्यय)		20,000	31 मार्च	(छः माह के लिए) शेष आ/ले		1,90,000
			2,00,000				2,00,000
2017 01 अप्रैल	शेष आ/ला		1,90,000	2018 31 मार्च	हास शेष आ/ले		20,000
			1,90,000				1,70,000
2018 01 अप्रैल	शेष आ/ला		1,70,000	2019 31 मार्च	हास शेष आ/ले		20,000
			1,70,000				1,50,000
							1,70,000

हास खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2017 31 मार्च	मशीन		10,000	2017 31 मार्च	लाभ-हानि		10,000
2018 31 मार्च	मशीन		10,000	2018 31 मार्च	लाभ-हानि		10,000
2019 31 मार्च	मशीन		20,000	2019 31 मार्च	लाभ-हानि		20,000
			20,000				20,000
			20,000				20,000
			20,000				20,000

कार्यकारी टिप्पणी

मशीन की मूल लागत की गणना (रु.)

क्रय लागत 1,80,00

जोड़िये: स्थापना लागत 20000

मूल लागत 2,00,000

2. हास व्यय = 2,00,000 रु. पर 10% से प्रतिवर्ष = 20,000 रु. प्रतिवर्ष

3. वर्ष 2016 में हास केवल 6 महीने के लिये लगाया जायेगा क्योंकि क्रय तिथि 01 अक्टूबर 2016 है अर्थात् वर्ष 2016-17 में परिसम्पत्ति का केवल 6 महीने उपयोग किया गया है।

$$4. \text{ हास (2016-17) } = 20,000 \text{ रु.} \times \frac{6}{12} = 10,000 \text{ रु.}$$

उदाहरण 3

प्रश्न 2 में दिये गये आंकड़ों के आधार पर 3 वर्ष का मशीन खाता हास खाता एवं हास पर प्रावधान खाता बनाइए यदि फर्म हास के लिए प्रावधान खाता रख रही है।

हल

**मेहरा एण्ड संस की पुस्तकें
मशीन खाता**

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2016 01 अक्टूबर	बैंक		1,80,000	2017 31 मार्च	शेष आ/ले		2,00,000
01 अक्टूबर	बैंक (स्थापना व्यय)		20,000				
			2,00,000				2,00,000
2017 01 अप्रैल	शेष आ/ला		2,00,000	2018 31 मार्च	शेष आ/ले		2,00,000
			2,00,000				2,00,000

मशीन पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2016 31 मार्च	शेष आ/ले		10,000	2016 31 मार्च	हास		10,000
			10,000				10,000
2017 31 मार्च	शेष आ/ले		30,000	2017 01 अप्रैल 31 मार्च	शेष आ/ला हास		10,000
			30,000				20,000
2018 31 मार्च	शेष आ/ले		50,000	2018 01 अप्रैल 2019 31 मार्च	शेष आ/ला हास		30,000
			50,000				20,000
							50,000

हास खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2017 31 मार्च	हास पर प्रावधान		10,000	2017 31 मार्च	लाभ-हानि		10,000
			10,000				10,000
2018 31 मार्च	हास पर प्रावधान		20,000	2018 31 मार्च	लाभ-हानि		20,000
			20,000				20,000
2019 31 मार्च	हास पर प्रावधान		20,000	2019 31 मार्च	लाभ-हानि		20,000
			20,000				20,000

उदाहरण 4

मै. डालमिया टैक्सटाइल मिल्स ने 1 अप्रैल, 2016 को मै. आहुजा एण्ड संस से 2,00,000 रु. की मशीन उधार एवं 10,000 रु. इसकी स्थापना पर व्यय किये। हास 10% वार्षिक की दर से क्रमागत आधार पर लगाना है। प्रथम तीन वर्ष का मशीन खाता तैयार करें। लेखा पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द की जाती हैं।

हल

डालमिया टैक्स्टाइल मिल्स की पुस्तकें

मशीन खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु
2016 01 अप्रैल	आहुजा एण्ड संस बैंक		2,00,000	2017 31 मार्च	हास शेष आ/ले		21,000 1,89,000
			10,000				
			2,10,000				2,10,000
2017 01 अप्रैल	शेष आ/ला		1,89,000	2018 31 मार्च	हास शेष आ/ले		18,900 1,70,000
			1,89,000				1,89,000
2018 01 अप्रैल	शेष आ/ला		1,70,100	2019 31 मार्च	हास शेष आ/ले		17,010 1,53,090
			1,70,100				1,70,100
2020 01 अप्रैल	शेष आ/ला		1,53,090				

कार्यकारी टिप्पणी

मूल्य हास राशि की गणना रु.

- (i) अप्रैल 01, 2016 को वास्तविक मूल्य 2,10,000
(घटाया) 2016-17 के लिए मूल्य हास 21,000
- (ii) अप्रैल 01, 2017 को मूल्य हास 1,89,000
(घटाया) 2017-18 के लिए मूल्य हास 18,900
- (iii) अप्रैल 2018 को मूल्य हास 1,70,100

(घटाया) 2018-19 मूल्य हास	<u>17,010</u>
अप्रैल 01, 2019 को मूल्य हास	1,53,090

उदाहरण 5

मै. साहनी एन्टरप्राइज़िज़ ने 01 जुलाई, 2014 को 40,000 रु. की एक प्रिंटिंग मशीन खरीदी एवं 5,000 रु. इसकी ढुलाई एवं स्थापना पर व्यय किये। 01 जनवरी, 2016 को एक और मशीन 35,000 रु. में खरीदी। 20% की दर से क्रमागत विधि के अनुसार हास लगाया गया है। वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2015, 2016, 2017 एवं 2018 को प्रिंटिंग मशीन खाता बनाइए।

हल

साहनी एन्टरप्राइज़िज़ की पुस्तकें
प्रिंटिंग मशीन खाता

Future's Key

Fukey Education

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2014			2015				
01 जुलाई	बैंक		40,000	31 मार्च	हास		6,750 ¹
	बैंक		5,000		शेष आ/ले		38,250
			45,000				45,000
2015				2016			
01 अप्रैल	शेष आ/ला		38,250	31 मार्च	हास		9,400 ²
01 जनवरी	बैंक		35,000		शेष आ/ले		63,850
			73,250				73,250
2016				2017			
01 अप्रैल	शेष आ/ला		63,850	31 मार्च	हास		12,770 ³
			63,850		शेष आ/ले		51,080
2017							63,850
01 अप्रैल	शेष आ/ला		51,080				

कार्यकारी टिप्पणी

रु

1 जुलाई, 2014 को खरीदी गई मशीन की मूल लागत 45,000

(-) 31 मार्च 2015 तक का हास (20% की दर से 9 माह का) (6,750)¹

38,250

(+) 1 जनवरी, 2016 को क्रय की गई नई मशीन की लागत 35,000

73,250

(-) वर्ष 2015-2016 का हास (9,400)²

3 माह के लिए 38,250 रु. और 35,000 रु. पर 20% हास)

31.3.2016 को अवक्षयित मूल्य 63,850

(-) वर्ष 2016-17 का हास (63,850 रु. का 20%) (12,770)³

31 मार्च, 2017 को अवक्षयित मूल्य 51,080

परिसम्पत्ति का निपटान/विक्रय

परिसम्पत्ति का निपटान या तो (क) इसके स्वामान्य जीवन के अन्त में अथवा (ख) इसके उपयोगी जीवन के मध्य प्रचलन के बाहर अथवा अन्य असामान्य कारण से हो सकता है।

यदि इसका विक्रय इसके उपयोगी जीवनकाल के अन्त में किया जाता है, तो परिसम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त राशि को अवशिष्ट मूल्य मानकर परिसम्पत्ति खाते के जमा पक्ष में लिखा जायेगा तथा शेष को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित किया जायेगा। इस सम्बन्ध में निम्न रोजनामचा प्रविष्टियां की जाएगी:

- | | | |
|------|--|-----|
| (i) | परिसम्पत्ति को अवशेष मानकर उसका विक्रय बैंक खाता परिसम्पत्ति खाते से | नाम |
| (ii) | परिसम्पत्ति खाते के शेष का हस्तान्तरण | |
| (क) | लाभ की स्थिति में परिसम्पत्ति खाता लाभ-हानि खाते से | नाम |
| (ख) | हानि होने पर लाभ-हानि खाता परिसम्पत्ति खाते से | नाम |

यदि हास के अभिलेखन के लिए हास पर प्रावधान संचित हास खाता खोला गया है तो उपरोक्त प्रविष्टियों से पहले हास प्रावधान संचित हास खाते के शेष को परिसम्पत्ति खाते में निम्न रोजनामचा प्रविष्टि के अभिलेखन द्वारा हस्तान्तरित किया जायेगा

हास पर प्रावधान खाता	नाम
परिसम्पत्ति खाते से	

उदाहरण के लिए आर. एस. लि. ने एक वाहन 4,00,000 रु. में क्रय किया इसका अवशिष्ट मूल्य अनुमानतः 40,000 रु. माना गया। सीधी रेखा विधि से प्रतिवर्ष लगाए जाने के लिए हास मूल्य राशि ज्ञात कीजिए। यह मानते हुए कि अन्त में यदि इसे 50,000 रु. में बेचा जाता है चार वर्ष का वाहन खाता बनाइए यदि:

- हास को प्रभार के रूप में परिसम्पत्ति खाते में दर्शाया गया है।

- हास पर प्रावधान खाता खोला गया है।
अब, आर. एस. लिमिटेड की निम्नलिखित प्रविष्टियों को देखें:
- जब हास को प्रभार के रूप में परिसम्पति खाते में दर्शाया गया है-

आर.एस लिमिटेड का पुस्तकें

वाहन खाता

नाम तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	जमा राशि
प्रथम वर्ष	बैंक		रु 4,00,000	वर्ष के अन्त में	हास शेष आ/ले		रु 90,000 3,10,000
			4,00,000				4,00,000
II वर्ष	शेष आ/ला		3,10,000	वर्षान्त	हास शेष आ/ले		90,000 2,20,000
			3,10,000				3,10,000
III वर्ष	शेष आ/ला		2,20,000	वर्षान्त	हास शेष आ/ले		90,000 1,30,000
			2,20,000				2,20,000
IV वर्ष	शेष आ/ला		1,30,000	वर्षान्त	हास		90,000
	लाभ-हानि (वाहन के विक्रय पर लाभ हास प्रावधान)		10,000		बैंक		50,000
			1,40,000				1,40,000

- जब हास पर प्रावधान रखा गया है

आर. एस. लिमिटेड की पुस्तकें

वाहन खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु
I वर्ष	बैंक		4,00,000	वर्षान्त	शेष आ/ले		4,00,000
			4,00,000				4,00,000
II वर्ष	शेष आ/ला		4,00,000	वर्षान्त	शेष आ/ले		4,00,000
III वर्ष	शेष आ/ला		4,00,000	वर्षान्त	शेष आ/ले		4,00,000
			4,00,000				4,00,000
IV वर्ष	शेष आ/ला		4,00,000	वर्षान्त	शेष आ/ले		4,00,000
			4,00,000				4,00,000
V वर्ष	शेष आ/ला लाभ हानि (वाहन के विक्रय पर लाभ)		4,00,000	वर्षान्त	हास पर प्रावधान		3,60,000
			10,000				50,000
			4,10,000				4,10,000

वाहन पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु
I वर्ष	शेष आ/ला		90,000	वर्षान्त	हास		90,000
			90,000				90,000

II वर्ष	शेष आ/ला	1,80,000	वर्षान्त	शेष आ/ले हास	90,000
		1,80,000			90,000
III वर्ष	शेष आ/ला	2,70,000	वर्षान्त	शेष आ/ले हास	1,80,000
		2,70,000			90,000
IV वर्ष	वाहन	3,60,000	वर्षान्त	शेष आ/ले हास	2,70,000
		3,60,000			90,000
					3,60,000

परिसम्पत्ति निपटान खाते की उपयोगिता

परिसम्पत्ति निपटान खाते की संरचना एक ही खाता शीर्ष के अर्न्तगत परिसम्पत्ति की बिक्री से संबन्धित सभी लेन-देनों को पूर्ण एवं स्पष्ट रूप से दिखाने के लिए की जाती है। संबंधित अन्य परिसम्पत्ति की मूल लागत, परिसम्पत्ति पर आज की तिथि तक संचित हास, परिसम्पत्ति का विक्रय मूल्य सम्पत्ति का शेष भाग जिसे उपयोग के लिए रख लिया है एवं विक्रय से लाभ अथवा हानि, होते हैं। इसे खाते के शेष लाभ हानि में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

इस पद्धति को जब परिसम्पत्ति के किसी भाग को बेचा जाता है एवं हास पर प्रावधान खाता खुला हो तब अपनाया जाता है।

इस पद्धति के अर्न्तगत परिसम्पत्ति निपटान खाते के नाम से एक नया खाता खोला जाता है। बेची गई परिसम्पत्ति की मूल्य लागत को परिसम्पत्ति खाते के नाम पक्ष में एवं इस परिसम्पत्ति की निपटान तिथि तक हास पर प्रावधान संचय खाते में स्थित संचित हास राशि को परिसम्पत्ति निपटान खाते के जमा पक्ष में दर्शाया जाता है। इस विक्रय से वसूली गई शुद्ध राशि को इसी परिसम्पत्ति निपटान खाते के जमा में लिखा जाता है। परिसम्पत्ति निपटान खाते का शेष लाभ अथवा हानि को दर्शाता है जिसे लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इस पद्धति का लाभ है कि यह सम्पत्ति निपटान से सम्बद्ध सभी लेन-देनों के एक ही स्थान पर पूरी तस्वीर प्रस्तुत

करता है। परिसम्पत्ति निपटान खाते को बनाने के लिए जिन रोजनामचों में प्रविष्टियों की आवश्यकता है वह इस प्रकार है:

- | | | |
|---|-----|-------------------------------------|
| 1. परिसम्पत्ति निपटान खाता
परिसम्पत्ति खाते से | नाम | (मूल परिसम्पत्ति का विक्रय) |
| 2. हास पर प्रावधान खाता
परिसम्पत्ति निपटान खाते से | नाम | (हास पर प्रावधान खाते पर संचित शेष) |
| 3. बैंक खाता
परिसम्पत्ति निपटान खाते से | नाम | (शुद्ध विक्रय राशि) |

परिसम्पत्ति निपटान खाता अन्त में नाम अथवा जमा शेष दिखाएगा। खाते का नाम शेष विक्रय पर हानि दिखाता है तथा इसकी प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

लाभ-हानि खाता परिसम्पत्ति निपटान खाते से	नाम	(विक्रय से होने वाली हानि की राशि)
---	-----	------------------------------------

खाते का जमा शेष निपटान पर लाभ दर्शा रहा है एवं इसे निम्न रोजनामचा प्रविष्टि से बन्द किया जायेगा परिसम्पत्ति

निपटान खाता लाभ-हानि खाता	नाम	(विक्रय पर लाभ)
------------------------------	-----	-----------------

लाभ-हानि खाता

उदाहरण के लिये, 31 मार्च, 2017 को करण एन्टरप्राइजिज की बहियों में निम्न शेष थे

मशीनरी (सकल मूल्य) 6,00,000 रु.

हास पर प्रावधान 2,50,000 रु.

1 नवम्बर, 2013 को 1,00,000 रु. में खरीदी गई एक मशीन जिस पर 60,000 रु. संचित हास था,

1 अप्रैल, 2017 को 35,000 रु. में बेचा। इस स्थिति में परिसंपत्ति निपटान इस प्रकार तैयार किया जाएगा:

करण एंटरप्राइजिज

मशीन निपटान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु
2017				2017			
01 अप्रैल	मशीनरी		1,00,000	01 अप्रैल	हास पर प्रावधान		60,000
				01 अप्रैल	बैंक		35,000
				2018			
				31 मार्च	लाभ-हानि (विक्रय पर हानि)		5,000 ¹
			<u>1,00,000</u>				<u>1,00,000</u>

मशीनरी खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु
2017				2017			
31 मार्च	शेष आ/ ला		6,00,000	01 अप्रैल	मशीन निपटान		1,00,000
				2018			
				31 मार्च	शेष आ/ले		5,00,000
			<u>6,00,000</u>				<u>6,00,000</u>

- | | |
|--|-----------------|
| 1. मशीन की बिक्री पर हानि की गणना | रु. |
| बेची गई मशीनरी परिसम्पत्ति की मूल लागत | 1,00,000 |
| घटाया: संचित हास | <u>(60,000)</u> |
| | 40,000 |
| 2. विक्रय मूल्य वसूल किया | <u>(35,000)</u> |
| विक्रय पर हानि (आर्थात् 40,000 रु. - 35,000 रु.) | 5,000 |

उदाहरण 6

01 जनवरी, 2015 को खोसला ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने 20,000 रु. प्रति ट्रक की कीमत से पाँच ट्रक खरीदे। इन पर सीधी रेखा विधि से 10% की दर से हास लगाया जा रहा है एवं हास प्रावधान खाता बनाया गया है। 1 जनवरी, 2016 को एक ट्रक को 15,000 रु. में बेच दिया गया। 01 जुलाई, 2017 को दूसरा ट्रक जिसे 2015 में 20,000 रु. में खरीदा गया था, 18,000 रु. में बेच

दिया गया। 1 अक्टूबर, 2017 को 30,000 रु. की लागत का नया ट्रक खरीदा गया। यह मानते हुए कि फर्म अपने खाते प्रति वर्ष दिसंबर में बंद करती है, वर्ष समाप्ति दिसंबर 2015, 2016, एवं 2017 को ट्रक खाता, हास पर प्रावधान एवं ट्रक निपटान खाता बनाइए।

खोसला ट्रांसपोर्ट कंपनी की पुस्तकें

ट्रक निपटान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2016				2016			
1 जनवरी	ट्रक (ट्रक का क्रय)		20,000	1 जनवरी	हास पर प्रावधान		2,000
				1 जनवरी	बैंक (बिक्री)		15,000
				1 जनवरी	लाभ-हानि (विक्रय पर हानि)		3,000
			<u>20,000</u>				<u>20,000</u>
2017				2017			
1 जुलाई	ट्रक		20,000	01 जुलाई	हास पर प्रावधान		5,000
1 जुलाई	लाभ-हानि (विक्रय पर लाभ)		3,000	31 दिसंबर	बैंक (विक्रय)		18,000
			<u>23,000</u>				<u>23,000</u>

ट्रक खाता

Fukey Education

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2015				2015			
01 जनवरी	बैंक (ट्रक का क्रय)		1,00,000	31 दिसंबर	शेष आ/ले		1,00,000
			1,00,000				1,00,000
2016				2016			
01 जनवरी	शेष आ/ला		1,00,000	01 जनवरी	ट्रक निपटान		20,000
				31 दिसंबर	शेष आ/ले		80,000
			1,00,000				1,00,000
2017				2017			
01 जनवरी	शेष आ/ला		80,000	01 जुलाई	ट्रक निपटान		20,000
01 अक्टूबर	बैंक (नया ट्रक खरीदा)		30,000		शेष आ/ले		9,000
			1,10,000				1,10,000

ट्रक पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2015				2015			
31 दिसंबर	शेष आ/ले		10,000	31 दिसंबर	हास		10,000
			10,000				10,000
2016				2016			
01 जनवरी	ट्रक निपटान		2,000	01 जनवरी	शेष आ/ला		10,000
31 दिसंबर	शेष आ/ले		16,000	31 दिसंबर	हास		8,000
			18,000				18,000
2017				2017			
01 जनवरी	ट्रक निपटान		5,000	01 जनवरी	शेष आ/ले		16,000
31 दिसंबर	शेष आ/ले		18,750	31 दिसंबर	हास (6,000 रु. + 1,000 रु. + 750 रु.)		7,750
			23,750				23,750

1. मूल्य हास राशि की गणना	रु.
वर्ष 2015 1,00,000 पर 10% (एक वर्ष का)	10,000 ¹
वर्ष 2016 80,000 पर 10% (एक वर्ष का)	8,000 ²
वर्ष - 2017	
60,000 रु. पर 10% (1 वर्ष का)	6,000
20,000 रु. पर 10% (6 मास का)	1,000
30,000 रु. पर 10% (3 मास का)	<u>750</u>
	7,750 ³
2. प्रथम टुक के विक्रय पर हानि:	
जनवरी 01, 2015 को मूल लागत	20,000
घटाया 10% से हास	<u>(2,000)</u>
जनवरी 01, 2016 को पुस्तक मूल्य	18,000
विक्रय मूल्य	<u>(15,000)</u>
प्रथम टुक के विक्रय पर हानि	3,000
3. द्वितीय टुक के विक्रय पर लाभ:	
द्वितीय टुक की मूल लागत	20,000
(घटाया) हास	
2015	2,000
2016	2,000
2017 (जून, 2016 तक)	<u>1,000</u>
	<u>5,000</u>
द्वितीय टुक का पुस्तक मूल्य	15,000
द्वितीय टुक का विक्रय मूल्य	<u>18,000</u>
विक्रय पर लाभ	<u>3,000</u>

उदाहरण 7

में. कनिष्का ट्रेडर्स में 31 अप्रैल, 2015 को निम्न शेष थे : फर्नीचर खाता 50,000 रु., फर्नीचर पर हास पर प्रावधान 22,000 रु.। 01 अक्टूबर, 2015 को फर्नीचर का एक भाग जिसे 01 अप्रैल, 2011 को खरीदा गया था, उसे 5,000 रु. में बेच दिया गया। उसी तिथि को 25,000 रु. लागत का नया फर्नीचर क्रय किया। हास 10% वार्षिक दर से परिसम्पत्ति की मूल लागत पर लगाया गया। विक्रय वाले वर्ष में परिसम्पत्ति पर कोई हास नहीं लगाया गया। वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2016 के लिये फर्नीचर खाता, एवं हास पर प्रावधान खाता बनाइए।

हल-

कनिष्का ट्रेडर्स की पुस्तकें
फर्नीचर खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2015				2015			
1 अप्रैल	शेष आ/ला		50,000	1 अक्टूबर	बैंक		5,000
1 अक्टूबर	बैंक		25,000	2016	हास पर प्रावधान		8,000
				31 मार्च	लाभ-हानि (विक्रय पर हानि)		7,000 ¹
					शेष आ/ले		55,000
			75,000				75,000

फर्नीचर पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2015				2015			
01 अक्टूबर	फर्नीचर (विक्रय किये फर्नीचर पर संचित हास)		8,000	01 अप्रैल	शेष आ/ला		22,000
2016				2016			
31 मार्च	शेष आ/ले		18,250	31 मार्च	हास (3,000 रु. + 1,250 रु.)		4,250 ²
			26,250				26,250

1. विक्रय पर हानि की गणना	रु.
01.10.2015 को फर्नीचर की मूल लागत	20,000
घटाया 01.04.2011 से 31.04.2015 तक का मूल लागत पर 10% प्रति वर्ष की दर से चार वर्ष का हास (बिक्री वर्ष में कोई हास राशि नहीं)	(8,000)
01.10.2015 को फर्नीचर का मूल्य	12,000
विक्रय मूल्य	5,000
विक्रय पर हानि	7,000

2. विक्रय पर हानि की गणना	
वर्ष 2015-16 का हास :	
30,000 रु. पर 10% की दर से पूरे वर्ष का हास (50,000 - 20,000 रु.)	3,000
25,000 रु. पर 10% की दर से 6 मास का हास	<u>1,250</u>
	<u>4,250²</u>

उदाहरण 8

उदाहरण 7 को हल करें - यदि फर्म फर्नीचर खाता एवं फर्नीचर पर हास प्रावधान खाते के साथ फर्नीचर निपटान खाता भी बना रही है।

कनिष्का ट्रेडर्स फर्नीचर खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो. पृ. सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो. पृ. सं.	राशि रु.
2015				2015			
01 अप्रैल	शेष आ/ला		50,000	अप्रैल	फर्नीचर निपटान		20,000
01 अक्टूबर	बैंक		25,000	2016			
				31 मार्च	शेष आ/ले		55,000
			<u>75,000</u>				<u>75,000</u>

हास खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो. पृ. सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो. पृ. सं.	राशि रु.
2015				2015			
01 अक्टूबर	फर्नीचर निपटान		8,000	01 अप्रैल	शेष आ/ला		22,000
2016				2016			
31 मार्च	शेष आ/ले		18,250	31 मार्च	हास		4,250
			<u>26,250</u>				<u>26,250</u>

फर्नीचर निपटान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु.
2015 01 अक्टूबर	फर्नीचर		20,000	2015 01 अक्टूबर	हास पर प्रावधान बैंक लाभ-हानि (विक्रय पर हानि)		8,000 5,000 7,000
			20,000				20,000

उदाहरण 9

1 जनवरी, 2012 को जैन एण्ड संस ने 2,00,000 रु. में एक पुराना संयंत्र खरीदा एवं 10,000 रु. इसकी काया कल्प पर व्यय किये। 50,000 रु. इसके भाड़े एवं स्थापना पर व्यय किये। 20% वार्षिक से क्रमागत विधि से हास लगाने का निर्णय लिया गया। 31 जुलाई, 2015 को संयंत्र में आग लग गई तथा बीमा कंपनी ने 50,000 रु. का दावा स्वीकार किया। यह मानते हुए कि फर्म की पुस्तकें प्रत्येक वर्ष 31 दिसंबर को बंद की जाती हैं, संयंत्र खाता, हास पर प्रावधान खाता और संयंत्र निपटान खाता बनाएँ।

Future's Key

Fukey Education

जैन एण्ड संस की पुस्तकें
संयन्त्र खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पु.सं.	राशि रु
2012				2012			
01 जनवरी	बैंक		2,15,000	31 दिसंबर	शेष आ/ले		2,15,000
			2,15,000				2,15,000
2013				2012			
1 जनवरी	शेष आ/ला		2,15,000	31 दिसंबर	शेष आ/ले		2,15,000
			2,15,000				2,15,000
2014				2013			
1 जनवरी	शेष आ/ला		2,15,000	31 दिसंबर	शेष आ/ले		2,15,000
			2,15,000				2,15,000
2015				2014			
1 जनवरी	शेष आ/ला		2,15,000	3 जुलाई	संयन्त्र निपटान		2,15,000
			2,15,000				2,15,000

Future's Key

Fukey Education

संयंत्र पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2012				2012			
31 दिसंबर	शेष आ/ले		43,000	31 दिसंबर	हास		43,000
			43,000				43,000
2013				2013			
01 जनवरी	शेष आ/ले		77,400	01 जनवरी	शेष आ/ला		43,000
			77,400		हास		34,400 ²
							77,400
2014				2014			
31 दिसंबर	शेष आ/ले		1,04,920	01 जनवरी	शेष आ/ला		77,400
			1,04,920	31 दिसंबर	हास		27,520 ³
							1,04,920
2015				2015			
31 जुलाई	संयंत्र निपटान		1,17,763	01 जुलाई	शेष आ/ला		77,400
			1,17,763	31 जुलाई	हास		12,843 ⁴
							1,77,763

संयंत्र निपटान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु
2015				2015			
31 जुलाई	संयंत्र		2,15,000	31 जुलाई	हास पर प्रावधान		1,77,763
			2,15,000		बीमा कंपनी		50,000
					लाभ-हानि		47,237 ⁵
							2,15,000

कार्यकारी टिप्पणी

- हास राशि की गणना रु
मूल लागत 01.01.2012 2,15,000

(2,00,000 रु. + 10,000 रु. + 5,000 रु.)	
वर्ष 2012 के लिए हास	
2,15,000 रु. 20%	<u>43,000¹</u>
	1,72,000
वर्ष 2013 के लिए हास	
(@ 20%, 1,72,000 पर)	<u>34,400²</u>
वर्ष 2014 के लिए हास	1,37,600
@ 20% 1,10,080 रु. पर	<u>27,520³</u>
	1,10,080
हास 31.07.15 तक	<u>12,843⁴</u>
(@ 20% 1,10,080 रु. पर)	97,237
बीमा दावा	(50,000)
निपटान पर हानि	47,237 ⁵

वर्तमान परिसम्पत्ति में बढ़ोत्तरी एवं विस्तार

वर्तमान परिसम्पत्ति को परिचालन के योग्य बनाने के लिए कुछ वृद्धि अथवा विस्तार की आवश्यकता होती है। यह वृद्धि विस्तार परिसम्पत्ति का सम्पूर्ण भाग बन भी सकता है और नहीं भी। इस वृद्धि विस्तार पर व्यय की गई राशि को पंजीकृत कर परिसंपत्ति के जीवन के दौरान अपलिखित किया जाता है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि इस प्रकार से व्यय की गई राशि मरम्मत एवं रखरखाव खर्चों से अतिरिक्त होती है। लेखांकन मानक - 6 (संशोधित) में दिया गया है कि-

1. किसी भी परिसम्पत्ति में वृद्धि अथवा विस्तार जो उसका सम्पूर्ण भाग बन चुकी है, के उस परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन काल में हास लगाकर समाप्त कर देना चाहिए।
2. इस वृद्धि अथवा विस्तार पर हास उसी दर पर लगाया जा सकता है जिस दर पर विद्यमान परिसम्पत्ति पर लगाया जा रहा है।
3. जहाँ वृद्धि अथवा विस्तार का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है एवं जिसे विद्यमान परिसम्पत्ति के निपटान के पश्चात उपयोग में लाया जा सकता है वहाँ ऐसी परिसम्पत्ति पर स्वतन्त्र रूप से इसके अपने उपयोगी जीवन पर हास लगाना चाहिए।

उदाहरण 10

मै. डिजीटल स्टूडियो ने 1 अप्रैल, 2013 को 8,00,000 रु. में एक मशीन खरीदी। इसकी मूल लागत पर 20% की दर से सीधी रेखा विधि से लगाया गया। 1 अप्रैल, 2015 की 80,000 रु. की लागत से इस मशीन की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए ठोस परिवर्तन किये गये। इस राशि पर 20% से सीधी रेखा विधि से हास लगाना है। वर्ष 2013-14 में समान्य रखरखाव व्यय 2,000 रु. किये गये।

वर्ष समाप्ति 31 मार्च 2013 के लेखा वर्ष के लिए मशीन खाता, मशीन पर हास प्रावधान खाता बनाएँ। साथ ही लाभ-हानि खाते नाम में की जाने वाली राशि को ज्ञात करें।

हल

मशीन खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2015				2016			
01 अप्रैल	शेष आ/ला बैंक		8,00,000	31 मार्च	शेष आ/ले		8,80,000
			80,000				
			8,80,000				8,80,000

मशीन पर हास प्रावधान खाता

तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2016				2015			
31 मार्च	शेष आ/ले		4,96,000	01 अप्रैल	शेष आ/ले		3,20,000 ¹
			4,96,000				3,20,000
				2016			
			4,96,000	31 मार्च	हास		1,76,000
							4,96,000

कार्यकारी टिप्पणी

रूपान्तर लागत का पूँजीकरण किया गया है लेकिन साधारण मरम्मत खर्चों को आगम व्यय माना गया है

2.	01.04.2013 को हास पर प्रावधान खाते के शेष की गणना 01.01.2011 को मूल लागत 8,00,000 रु. वर्ष 2011-12 व 2012-13 के लिए हास राशि (8,00,000 रु. पर 20% हास)	3,20,000 रु.
3.	2013-14 के लिए हास की गणना इस प्रकार से की गई है: 8,00,000 रु. का 20% 80,000 रु. का 20% 2015-16 का कुल मूल्य हास	1,60,000 रु. <u>16,000 रु.</u> 1,76,000 ²
4.	लाभ हानि खाते में नाम की जानेवाली राशि हास मरम्मत एवं रखरखाव	1,76,000 रु. 2,000 रु.

उदाहरण 11

01 अप्रैल, 2015 को मै. निशित प्रिंटिंग प्रेस ने एक प्रिंटिंग मशीन खरीदी। हास मूल लागत पर 20% से सीधी रेखा विधि से लगाया गया। 01 अप्रैल, 2017 को मशीन की तकनीकी योग्यता को बढ़ाने के लिए इसके रूपान्तर पर 70,000 रु. व्यय किए। वैसे इस रूपान्तर से मशीन के उपयोगी जीवन में वृद्धि की संभावना नहीं है। अधिक घिसावट के कारण मशीन के एक महत्वपूर्ण घटक को बदल दिया गया इस पर 20,000 रु. खर्च आया। 2013-14 में 5,000 रु. साधारण रखरखाव व व्यय 5,000 रु. थे।

लेखा वर्ष 31 मार्च, 2018 की समाप्ति के लिए मशीन खाता, हास पर प्रावधान खाता तैयार करें। साथ ही लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखी जाने वाली राशि को ज्ञात करें।

हल

मशीन खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2017			2018				
1 अप्रैल	शेष आ/ला बैंक बैंक		6,80,000	31 मार्च	शेष आ/ले		7,70,000
			70,000				
			20,000				
			7,70,000				7,70,000

मशीन पर हास प्रावधान खाता

नाम				जमा			
तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पू.सं.	राशि रु.
2018			2017				
31 मार्च	शेष आ/ले		4,26,000	1 अप्रैल	शेष आ/ला		2,72,000 ¹
				2018			
				31 मार्च	हास		1,54,000 ²
			4,26,000				4,26,000

रु.

1. वर्ष 2015 के लिए मशीन की लागत 6,80,000 रु.

2015-16 और 2016-17 के लिए मूल्य हास

$$2 \left[\frac{20}{100} \times 6,80,000 \right]$$

2,72,000 रु.

2. वर्ष 2017-18 के लिए मूल्य हास

6,80,000

$$\text{रु. } 6,80,000 \times \frac{20}{100}$$

1,36,000 रु.

$$\text{रु. } 90,000 \times \frac{20}{100}$$

18,000 रु.

(अर्थात् 70,000 रु. + 20,000 रु.)

वर्ष 2017-18 पर मूल्य हास

1,54,000 रु.

प्रावधान

कुछ खर्चे, हानियाँ वर्तमान लेखा वर्ष से सम्बन्धित होते हैं क्योंकि यह व्यय अभी किये नहीं गये हैं इसलिए इनकी राशि सुनिश्चित नहीं है। सही शुद्ध लाभ निकालने के लिए ऐसी मदों के लिए प्रावधान करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए एक व्यापारी को जो उधार विक्रय करता है उसे पता है कि चालू वर्ष के कुछ देनदार या तो कुछ भी भुगतान नहीं करेंगे या आंशिक भुगतान करेंगे। सतर्कता एवं रूढ़िवादिता के संकल्पना के अनुसार सही एवं उचित लाभ-हानि की गणना के लिए। इसीलिए व्यापारी देनदारों से वसूली के समय संभावित हानि से बचाव के लिए संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान करता है। इसी प्रकार से स्थाई परिसम्पत्तियों की संभावित मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए प्रावधान कर सकता है। प्रावधानों के उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. हास के लिए प्रावधान
2. डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान
3. कर के लिए प्रावधान
4. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान
5. मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए प्रावधान

प्रावधानों का लेखांकन

सभी प्रकार के प्रावधानों का लेखांकन लगभग एक जैसा होता है। इसी लिए यहां संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान के लेखांकन व्यवहार को उदाहरण स्वरूप समझाया गया है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है जब भी व्यावसायिक लेन-देन उधार किया जाता है तो देनदार खाता बनाया जाता है तथा इसके शेष को तुलन-पत्र की परिसम्पत्ति की ओर दर्शाया जाता है। यह देनदार तीन प्रकार के हो सकते हैं

1. सही देनदार वह होते हैं जिनसे वसूली निश्चित है।
2. डूबत ऋण वह देनदार हैं जिनसे वसूली की कोई सम्भावना नहीं है तथा हानि की राशि जमा में लिखी जाएगी।

3. संदिग्ध ऋण वह देनदार होते हैं जो भुगतान तो करेंगे लेकिन उनसे पूरी राशि की वसूली की आशा नहीं है। व्यवसाय के अनुभव से पता लगता है एेसे देनदारों का कुछ प्रतिशत भुगतान नहीं करेगा इसलिए इन्हें संदिग्ध ऋण माना जाएगा। यदि संदिग्ध देनदार भुगतान नहीं करते हैं तो सही लाभ अथवा हानि निकालने के लिए एेसी संभावित हानि के लिए यह एक सामान्य व्यवहार है (एवं आवश्यक भी) कि संदिग्ध ऋणों के लिए आवश्यक प्रावधान किया जाए। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान कुल देनदारों पर सभी डूबत ऋण, जिनकी पहले से ही जानकारी है, को घटाकर एक निश्चित प्रतिशत से किया जाता है। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को डूबत एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान भी कहते हैं। इस प्रकार के प्रावधान के सृजन के लिए प्रावधान की राशि लाभ हानि खाते के नाम और संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान खाते के जमा में लिखी जाती है।

संदिग्ध ऋणों के प्रावधान के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी:

लाभ हानि खाता नाम (प्रावधान की राशि से)

संदिग्ध ऋण खाते से

तिथि	खाते के नाम	नाम खाता (रु.)	जमा खाता (रु.)
	कुल देनदार	68,000	

अतारिक्त सूचना

- डूबत ऋण जिनका लेखा नहीं किया गया 8,000 रु.।
- देनदारों पर 10% से प्रावधान करना है।

संदिग्ध ऋणों के प्रावधान के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी:

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पू.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
2015				
31 मार्च	अशोध्य ऋण खाता नाम कुल देनदार खाते से (अशोध्य ऋण घटाए गये)		8,000	8,000
31 मार्च	लाभ हानि खाता नाम डूबत ऋण खाते से (अशोध्य ऋण लाभ हानि खाते के नाम लिखे गये)		8,000	8,000
31 मार्च	लाभ हानि खाता नाम संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाते से (संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान का सृजन)		6,000	6,000

कार्यकारी टिप्पणी

कुल देनादारों पर 10% से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान अर्थात्

(68,000 रु. - 8,000 रु.) = 60,000 रु.

संचय

लाभ के एक भाग को अलग रखकर व्यवसाय में संचित किया जा सकता है। इससे विकास एवं विस्तार जैसी भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा कर्मचारियों की क्षति पूर्ति जैसी भविष्य की आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। संचय सृजन से यह संभव है। प्रावधान भिन्न व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए संचय लाभ का समायोजन है। संचय लाभ पर व्यय भार नहीं है। इसका उपयोग भविष्य में किसी देयता के भुगतान या सम्भावित हानि की पूर्ति के लिए नहीं किया जाता है।

संचय के रूप में लाभ को रोक लेने से व्यवसाय के स्वामियों में वितरण के लिए राशि कम रह जाएगी। इसे तुलन-पत्र के देयता पक्ष की ओर पूँजी की मद के पश्चात् संचय एवं आधिक्य शीर्षक में दिखाया जाता है।

संचय के उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. सामान्य संचय

2. कर्मचारी क्षति पूरक कोष
3. निवेश परिवर्तन कोष
4. पूँजी संचय
5. लाभांश समानीकरण
6. ऋण-पत्रों के शोधन के लिए संचय

संचय एवं प्रावधान में अन्तर

अन्तर का आधार	प्रावधान	संचय
1. मूल प्रकृति	लाभ पर प्रभार	लाभ का समायोजन
2. उद्देश्य	इसका सृजन चालू लेखा वर्ष की पहले से ही दी गई देनदारी अथवा खर्च के लिए किया जाता है लेकिन जिसकी राशि निश्चित न हो।	इसको व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए बनाया जाता है।
3. कर योग्य लाभ पर प्रभाव	इससे कर योग्य लाभ कम हो जाता है	इसका कर योग्य लाभ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
4. तुलन पत्र में प्रस्तुतिकरण	इसे (i) परिसम्पत्ति की ओर उस मद में से घटा कर दिखाया जाता है जिसके लिए इसका सृजन किया गया है (ii) चालू देनदारी के साथ देयता पक्ष की ओर दिखाया जाता है।	इसे देयता पक्ष की ओर पूँजी के पश्चात दिखाया जाता है।
5. अनिवार्यता	प्रावधान की व्यवस्था सतर्कता एवं रूढ़ीवादिता की संकल्पना के अनुरूप सही एवं उचित लाभ एवं हानि ज्ञात करने के लिए आवश्यक है। लाभ न होने पर भी इसकी व्यवस्था की जाती है।	सामान्यतः संचय का प्रावधान प्रबन्ध की इच्छा पर निर्भर करता है। लाभ न होने पर संचय करना संभव नहीं है। वैसे कुछ मामलों में कानून ने विशिष्ट संचय जैसे ऋण-पत्र शोधन संचय अनिवार्य कर दिया है।
6. लाभांश के भुगतान के लिए उपयोग	इसका उपयोग लाभांश के लिए नहीं किया जा सकता	इसका उपयोग लाभांश वितरण के लिए किया जा सकता है।

संचय के प्रकार

व्यवसाय के लाभ को रोक कर संचय का निर्माण या तो सामान्य या फिर विशिष्ट उद्देश्य के लिए हो सकता है।

(1) सामान्य संचय: जब संचय निर्माण का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं होता है तो इसे सामान्य संचय कहते हैं। इसे स्वतन्त्र संचय भी कहते हैं क्योंकि प्रबन्धक इसे स्वतन्त्र संचय से किसी भी उद्देश्य के लिए उपयोग कर सकते हैं। सामान्य संचय व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करते हैं।

(2) विशिष्ट संचय: विशिष्ट संचय वह संचय होते हैं जिनका निर्माण एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है एवं इसका उपयोग इन्हीं उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। विशिष्ट संचय के कुछ उदाहरण नीचे दिये हैं:

(i) लाभांश समानीकरण संचय: इस संचय निर्माण लाभांश की दर को स्थिर रखने या समान रखने के लिए किया जाता है। लाभ के अधिक होने वाले वर्ष में राशि को लाभांश समानीकरण संचय में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। यदि किसी वर्ष में लाभ कम हुआ है तो इस संचय की हुई राशि को लाभांश की दर को समान रखने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

(ii) कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष: इसका निर्माण दुर्घटना आदि के कारण कर्मचारियों के दावों के लिए प्रावधान करने के लिए किया जाता है।

(iii) विनियोग परिवर्तनशील कोष: इसका निर्माण बाजार में उतार चढ़ाव के कारण विनियोग की कीमत में कमी को पूर्ति के लिए किया जाता है।

(iv) ऋण शोधन संचय: इस संचय का सृजन ऋण पत्रों के शोधन के लिए कोष को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है। संचय को, लाभ की प्रकृति के अनुसार जिसमें से इसका सृजन किया गया है, को आयगत संचय एवं पूँजीगत संचय में वर्गीकृत किया गया है।

(क) आयगत संचय: आयगत संचय में उन आयगत लाभों में सृजन किया जाता है जो व्यवसाय की सामान्य संचालन क्रियाओं का परिणाम होते हैं अन्यथा जो लाभांश वितरण के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं। आयगत संचय के उदाहरण हैं:

- सामान्य संचय
- कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष
- निवेश परिवर्तन कोष

- लाभांश समानीकरण संचय
- ऋण पत्र शोधन संचय का निर्माण

(ख) पूँजीगत संचय: पूँजीगत संचय, पूँजीगत लाभों में से किया जाता है। यह लाभ सामान्य संचयलन गतिविधियों के कारण नहीं होते हैं। यदि कम्पनी है तो इस संचय का उपयोग पूँजीगत हानियों को समाप्त करने अथवा बोनस अंशों के निर्गमन के लिए किया जाता है।

पूँजीगत लाभ जिन्हें पूँजीगत संचय माना जाता है चाहे उन्हें इस रूप में हस्तान्तरित किया गया हो अथवा नहीं, के उदाहरण हैं:

- अंश अथवा ऋणपत्रों के जारी करने पर प्रिमियम
- स्थाई परिसम्पत्ति के विक्रय पर लाभ
- ऋण पत्रों के शोधन पर लाभ
- स्थाई परिसम्पत्ति एवं देयताओं के पूर्णमूल्यांकन पर लाभ, समामेलन से पूर्व लाभ
- जब्त किये गये अंशों के पुनः निर्गमन पर लाभ

आयगत एवं पूँजीगत संचय में अन्तर

अन्तर का आधार	आयगत संचय	पूँजीगत संचय
1. सृजन का स्रोत	इसका सृजन आयगत लाभ में से किया जाता है जो कि व्यवसाय की सामान्य परिचाल क्रियाओं से पैदा होता है अन्यथा जो लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध रहता है।	इसका निर्माण मूलतः पूँजीगत लाभ में से होता है जो व्यवसाय के सामान्य परिचालन का परिणाम नहीं होते और ना ही उनका लाभांश वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। यद्यपि आयगत लाभों को भी इसके लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।
2. उद्देश्य	इसका सृजन वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने, अप्रत्याशित सम्भाव्यों का भुगतान करने या फिर विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।	इसका सृजन कानूनी औपचारिकताओं अथवा लेखांकन रीतियों को निभाने के लिए किया जाता है।
3. उपयोग	विशिष्ट आयगत संचय को उद्देश्य के लिए ही उपयोग किया जा सकता है जबकि सामान्य संचय का लाभांश वितरण सहित किसी भी अन्य उद्देश्य के लिए उपयोग किया जा सकता है।	इसे प्रचलित कानून में निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग किया जा सकता है। जैसे पूँजीगत कृतियों को लेखा पुस्तकों में से समाप्त करना या बोनस अंश जारी करना

संचय का महत्व

एक व्यावसायिक फर्म के लिए भविष्य में होने वाले अप्रत्याशित खर्च एवं हानियों से बचाव के लिए कोई भी उचित प्रणाली स्थापित करना उचित रहेगा। कुछ मामलों में उसके लिए अधिक उचित रहेगा कि व्यवसाय के स्वामी लाभ में से कम भाग को निकाले जिससे कि कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यवसाय की साधनों को बचाकर रखा जा सके। ऐसी किसी आवश्यकता का एक उदाहरण व्यवसाय परिचालन के पैमाने को विस्तार की आवश्यकता है। व्यावसायिक एवं लेखांकन में संचय की आवश्यकता का औचित्य सिद्ध करती है। इस प्रकार से जो राशि अलग से रखी जायेगी वह निम्न उद्देश्यों के लिए होगी:

- भविष्य में होने वाली किसी भी आकस्मिक आवश्यकता के लिए।
- व्यवसाय की साधारण वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए।
- ऋण-पत्रों जैसी दीर्घ अवधि देयताओं के शोधन के लिए।

गुप्त संचय

गुप्त संचय वह संचय होता है जिसे तुलन-पत्र में नहीं दिखाया जाता। यह दिखाये जाने वाले लाभ एवं कर देयता को कम पर दिखाने में सहायक होता है। कमी के समय में अधिक लाभ दिखाने के लिए गुप्त संचय को लाभ में मिला दिया जाता है। प्रबन्धक उचित से अधिक हास लगाकर गुप्त संचय का सृजन करते हैं। इसे गुप्त संचय इसलिए कहा जाता है क्योंकि बाहर के अंश धारकों को इसका ज्ञान नहीं होता है। गुप्त संचय का सृजन निम्न ढंग से भी किया जा सकता है।

- रहतिया/स्कन्ध का अवमूल्यन।
- पूँजीगत व्यय का लाभ-हानि खाते में लिखना संदिग्ध ऋणों के लिए आवश्यकता से अधिक प्रावधान करना।
- सम्भाव्य देयता को वास्तविक देयता दिखाना।

उचित सीमा तक गुप्त संचय के निर्माण को युक्ति संगत एवं सतर्कता तथा अन्य फर्मों से प्रतियोगिता को रोकने के लिए उचित ठहराया जा सकता है।

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 304 - 309)

लघुउत्तरीय प्रश्न:

प्रश्न 1 हास क्या है?

उत्तर – सम्पत्ति के लगातार प्रयोग से उसके मूल्य में होने वाली कमी को मूल्य-हास कहते हैं।

प्रश्न 2 हास की आवश्यकता को संक्षेप में बताइये।

उत्तर – हास की आवश्यकता निम्न कारणों से होती है:

1. आगम एवं लागत का मिलान
2. कर के लिए महत्त्व
3. सत्य एवं उचित वित्तीय स्थिति
4. कानून का अनुपालन
5. सम्पत्ति का पुनर्स्थापन
6. सम्पत्ति का सही मूल्य ज्ञात करना।

प्रश्न 3 हास के क्या कारण हैं?

उत्तर – हास के निम्नलिखित कारण हैं:

1. क्षय एवं घिसावट अथवा समय की समाप्ति के कारण मूल्य में कमी
2. कानूनी अधिकार की समाप्ति
3. अप्रचलन
4. असामान्य तत्व-दुर्घटना आदि।

प्रश्न 4 हास की राशि को प्रभावित करने वाले तत्वों (Factors) को समझाइए।

उत्तर – किसी भी सम्पत्ति के मूल्य-हास की राशि को अग्र तत्व प्रभावित करते हैं:

1. सम्पत्ति का लागत मूल्य (Actual Cost of an Asset)

2. म्पत्ति का विस्तार (Expansion of Assets)
3. कार्य परिस्थितियाँ (Working Conditions)
4. मरम्मत का प्रबन्ध (Arrangement of Repairs)
5. सम्पत्ति का अनुमानित जीवन काल (Estimated Life of Assets)

प्रश्न 5 हास की गणना करने की सीधी रेखा विधि एवं क्रमागत विधि में अन्तर्भेद कीजिए।

उत्तर –

अन्तर का आधार	सीधी रेखा विधि (Striaight Line Method)	क्रमागत विधि (Diminishing Balance Method)
1. मूल्य-हास	इस विधि में मूल्य-हास प्रति वर्ष समान रहता	इस विधि में मूल्य-हास प्रति वर्ष घटता
2. मूल्य-हास की गणना	इस विधि में मूल्य-हास की गणना मूल्य-हास की गणना लागत पर की जाती है।	इस विधि में मूल्य-हास की गणना अपलिखित मूल्य पर की जाती है।
3. आयकर कानून द्वारा मान्य	यह विधि आयकर कानून के अन्तर्गत मान्य नहीं	यह विधि आयकर कानून के अन्तर्गत मान्य है।
4. उपयुक्तता	यह विधि उन सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त होती है जिनमें मरम्मत (Repair) के कम खर्चे होते हैं तथा अप्रचलन की सम्भावना कम होती है।	यह विधि उन सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त होती है जिन पर तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 6 दीर्घ अवधि की परिसम्पत्तियों के मरम्मत व रख-रखाव व्ययों में बाद के वर्षों में पहले के वर्षों की अपेक्षा वृद्धि की सम्भावना रहती है। यदि प्रबन्धक मूल्य-हास एवं मरम्मत के कारण लाभ-हानि खाते पर भार बढ़ाना नहीं चाहें तो मूल्य-हास लगाने की कौनसी विधि उपयुक्त है?

उत्तर – क्रमागत शेष विधि का उपयोग करना उचित होगा।

प्रश्न 7 हास का लाभ-हानि खाते एवं तुलन-पत्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर – लाभ-हानि खाते में लाभ कम हो जाता है व तुलन-पत्र में सम्पत्ति का मूल्य कम हो जाता है।

प्रश्न 8 प्रावधान व संचय में अन्तर्भेद कीजिए।

उत्तर –

अन्तर का आधार	प्रावधान	संचय
1. मूल प्रकृति	लाभ पर प्रभार	लाभ का समायोजन
2. उद्देश्य	इसका सृजन चालू लेखा वर्ष की पहले से ही दी गई देनदारी अथवा खर्च के लिए किया जाता है लेकिन जिसकी राशि निश्चित न हो।	इसको व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए बनाया जाता है।
3. कर योग्य लाभ पर प्रभाव	इससे कर योग्य लाभ कम हो जाता है	इसका कर योग्य लाभ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
4. तुलन पत्र में प्रस्तुतिकरण	इसे (i) परिसम्पत्ति की ओर उस मद में से घटा कर दिखाया जाता है जिसके लिए इसका सृजन किया गया है (ii) चालू देनदारी के साथ देयता पक्ष की ओर दिखाया जाता है।	इसे देयता पक्ष की ओर पूँजी के पश्चात दिखाया जाता है।
5. अनिवार्यता	प्रावधान की व्यवस्था सतर्कता एवं रूढ़ीवादिता की संकल्पना के अनुरूप सही एवं उचित लाभ एवं हानि ज्ञात करने के लिए आवश्यक है। लाभ न होने पर भी इसकी व्यवस्था की जाती है।	समान्यतः संचय का प्रावधान प्रबन्ध की इच्छा पर निर्भर करता है। लाभ न होने पर संचय करना संभव नहीं है। वैसे कुछ मामलों में कानून ने विशिष्ट संचय जैसे ऋण-पत्र शोधन संचय अनिवार्य कर दिया है।
6. लाभांश के भुगतान के लिए उपयोग	इसका उपयोग लाभांश के लिए नहीं किया जा सकता	इसका उपयोग लाभांश वितरण के लिए किया जा सकता है।

प्रश्न 9 प्रावधान एवं संचय के चार-चार उदाहरण दीजिए।

उत्तर –

प्रावधान:

1. देनदारों पर छूट के लिए आयोजन।

2. डूबत व संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन।
3. मरम्मत तथा नवीनीकरण के लिए आयोजन।
4. मूल्य-हास के लिए आयोजन।

संचय:

1. सामान्य संचय (General Reserve)
2. लाभांश समानीकरण कोष (Dividend Equalisation Fund)
3. पूँजी संचय (Capital Reserve)
4. ऋण-पत्रों के शोधन के लिए संचय (Reserve for Redemption of Debenture)

प्रश्न 10 आगम संचय व पूँजी संचय में अन्तर्भेद कीजिए।

उत्तर -

अन्तर का आधार	आगम संचय	पूँजी संचय
1. सृजन का स्रोत	इसका सृजन आयगत लाभों से किया जाता है।	इसका सृजन पूँजीगत लाभों से किया जाता है।
2. उद्देश्य	इसका निर्माण वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने या विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।	इसका निर्माण कानूनी औपचारिकताओं को निभाने के लिए किया जाता है।
3. उपयोग	इसका उपयोग विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।	इसका उपयोग कानूनी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है।

प्रश्न 11 आगम संचय व पूँजीगत संचय के चार उदाहरण दीजिए।

उत्तर -

आगम संचय:

- सामान्य संचय,
- कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष,

- निवेश परिवर्तन कोष,
- लाभांश समानीकरण संचय।

पूँजीगत संचय:

- हरण किये गये अंशों के पुनर्निर्गमन (Reissue) पर लाभ,
- अंशों तथा ऋण-पत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम,
- ऋण-पत्रों के शोधन (Redemption) पर लाभ,
- स्थायी सम्पत्ति के विक्रय पर लाभ।

प्रश्न 12 सामान्य संचय एवं विशिष्ट संचय में अन्तर बताइये।

उत्तर – सामान्य संचय-जब संचय निर्माण का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं होता है तो यह सामान्य संचय कहलाता है। सामान्य संचय व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करता है। सामान्य संचय को स्वतंत्र संचय भी कहते हैं क्योंकि प्रबन्धक इसे किसी भी उद्देश्य के लिए उपयोग कर सकते हैं। विशिष्ट संचय किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाये जाने वाले संचय विशिष्ट संचय कहलाते हैं। इन संचयों का उपयोग उसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। जैसे - लाभांश, समानीकरण संचय, कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष, विनियोग परिवर्तनशील कोष, ऋण शोधन संचय आदि।

प्रश्न 13 गुप्त संचय की संकल्पना को समझाइए।

उत्तर – गुप्त संचय से आशय ऐसे संचय से है जो अपनी विद्यमानता को तो प्रकट करता है लेकिन स्थिति विवरण में उसका अस्तित्व दर्शाया नहीं जाता। यह दिखाये जाने वाले लाभ एवं कर देयता को कम पर दिखाने में सहायक होता है। कमी के समय में अधिक लाभ दिखाने के लिए गुप्त संचय को लाभ में मिला दिया जाता है। प्रबन्धक उचित से अधिक हास लगाकर गुप्त संचय का सृजन करते हैं। इसे गुप्त संचय इसलिए कहा जाता है क्योंकि बाहर के अंशधारकों को इसका ज्ञान नहीं होता है।

निम्न उपायों से भी गुप्त संचय का सृजन किया जा सकता है:

- रहतिया/स्कन्ध का अवमूल्यन।

- व्यय का लाभ-हानि खाते में लिखना संदिग्ध ऋणों के लिए आवश्यकता से अधिक प्रावधान करना।
- सम्भाव्य देयता को वास्तविक देयता दिखाना।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न:

प्रश्न 1 हास की अवधारणा को समझाइए। हास लगाने की क्या आवश्यकता है एवं इसके क्या कारण हैं?

उत्तर – किसी सम्पत्ति का लगातार उपयोग करने से उसके मूल्य में जो कमी आती है, उसे मूल्य-हास (Depreciation) कहते हैं। प्रत्येक सम्पत्ति का एक जीवन काल होता है। उसके बाद वह अनुपयोगी हो जाती है तथा उसे प्रतिस्थापित करना पड़ता है। मूल्य-हास के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्न हैं कार्टर के अनुसार "एक सम्पत्ति के मूल्य में किसी भी कारण से होने वाली शनैः-शनैः और स्थायी कमी को मूल्य-हास कहते हैं।"

स्पाइसर व पेगलर के अनुसार- "मूल्य-हास को एक निश्चित अवधि में किसी कारण से सम्पत्ति के क्रियात्मक जीवन की समाप्ति की माप के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड मैनेजमेंट एकाउंटिंग, लंदन (ICMA) के अनुसार, "हास परिसम्पत्ति के वास्तविक मूल्य में इसके उपयोग एवं/अथवा समय बीतने के कारण आई घटोतरी को कहते हैं।"

इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (ICAI) द्वारा जारी लेखांकन मानक-6 ने हास की परिभाषा इस प्रकार दी है, "यह, अवक्षयण योग्य परिसम्पत्ति में घिसावट, उपभोग अथवा कीमत में कोई अन्य कमी जो उपयोग, समय के व्यतीत होने अथवा तकनीक एवं बाजार में परिवर्तन के कारण अप्रचलित होने से हुई है का मापन है।"

हास का निर्धारण परिसम्पत्ति के सम्भावित उपयोगी जीवन काल में प्रति लेखांकन अवधि में हास की राशि के संतोषजनक भाग को व्यय दर्शाने के लिए किया जाता है। हास में उन सभी परिसम्पत्तियों का अपलेखन सम्मिलित होता है जिनकी जीवन अवधि पूर्व निर्धारित है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है मूल्य-हास स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में शनैः-शनैः आने वाली कमी को कहा जाता है। सम्पत्ति के मूल्य में यह कमी निरन्तर प्रयोग, मूल्य में परिवर्तन, नष्ट होना, नये आविष्कार, समय व्यतीत होने इत्यादि से होती है।

मूल्य-हास की आवश्यकता एवं उद्देश्य (Need and Objects of Depreciation): स्थायी सम्पत्तियों पर निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मूल्य-हास लगाया जाता है:

(1) आगम एवं लागत का मिलान-स्थायी परिसम्पत्तियों का व्यवसाय के परिचालन में उपयोग से आगम का अर्जन होता है। हर परिसम्पत्ति कुछ न कुछ घिसती है इसलिए इसका मूल्य कम हो जाता है। इसीलिए हास भी व्यवसाय के किसी भी अन्य दूसरे सामान्य व्यय जैसे वेतन, भाड़ा, पोस्टेज एवं स्टेशनरी आदि के समान व्यय है। यह समान अवधि के आगमन पर प्रभार होता है इसीलिए इन्हें साधारण रूप से सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धान्तों (GAAP) का अनुकरण करते हुए निवल लाभ निर्धारण व पूर्व घटाना अनिवार्य होता है।

(2) कर के लिए महत्त्व-करों की दृष्टि से हास घटाने योग्य व्यय हैं। वैसे हास की राशि के निर्धारण के लिए कर सम्बन्धी नियम व्यवसाय में वर्तमान में प्रचलित नियमों के समान होने आवश्यक नहीं हैं।

(3) सही आर्थिक स्थिति की जानकारी करना व्यापार की सही आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए प्रत्येक वर्ष के अन्त में एक निश्चित तिथि को चिट्ठा बनाया जाता है। चिठे द्वारा सही जानकारी तभी प्राप्त होगी जबकि सम्पत्तियों व दायित्वों को सही मूल्य पर दिखाया जाये।

(4) कानून का अनुपालन कर नियमों के अतिरिक्त कुछ निश्चित नियम हैं जो परोक्ष रूप से कुछ व्यावसायिक संगठनों जैसे निगमित उद्यम को स्थायी परिसम्पत्ति पर मूल्य हास के प्रावधान के लिए बाध्य करते हैं।

(5) सही लाभ-हानि की जानकारी करना व्यापार में सम्पत्ति का प्रयोग करने से उसके मूल्य में जो कमी आती है, वह भी व्यापार संचालन का एक खर्चा है। अतः सही लाभ अथवा हानि की जानकारी के लिए मूल्य हास लगाया जाता है।

(6) सम्पत्ति के प्रतिस्थापन के लिए स्थायी सम्पत्ति को उपयोग में लेने से व्यापार निरन्तर लाभ कमाता है और एक समय बाद वह सम्पत्ति बेकार हो जाती है और उसे प्रतिस्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यापारी सम्पत्ति पर हास कोष या बीमा पॉलिसी विधि द्वारा सम्पत्ति को प्रतिस्थापित करने की व्यवस्था करता है।

(7) लाभांश का पूँजी में से वितरण यदि मूल्य-हास का प्रबन्ध किये बिना समस्त लाभ बाँट दिया जाता है तो लाभांश का वितरण पूँजी में से होगा और इस प्रकार पूँजी समाप्त होने लगेगी।

(8) सही लागत मूल्य ज्ञात करना..यदि सम्पत्तियों पर मूल्य-हास की सही व्यवस्था नहीं दी जाती है तो उत्पादित वस्तुओं का सही लागत मूल्य ज्ञात नहीं होगा क्योंकि मूल्य-हास की राशि भी उत्पादन लागत का एक भाग मानी जाती है।

मूल्य-हास के कारण (Causes of Depreciation): किसी सम्पत्ति पर मूल्य-हास अपलिखित करने के निम्न कारण हैं:

(1) क्षय एवं घिसावट अथवा समय की समाप्ति के कारण मूल्य में कमी क्षय एवं घिसावट का अर्थ है क्षमता में कमी एवं परिणामस्वरूप परिसम्पत्ति के मूल्य में गिरावट, जो इसके आय अर्जन के लिए व्यवसाय प्रचालन में उपयोग के कारण होती है। इससे परिसम्पत्ति की अपने उद्देश्य को पूरा करने की तकनीकी क्षमता कम हो जाती है।

क्षय एवं घिसावट का दूसरा पहलू परिसम्पत्ति का भौतिक रूप से नष्ट होना है। कुछ परिसम्पत्तियाँ मात्र समय के व्यतीत होने के साथ नष्ट होती रहती हैं जबकि उनका कोई उपयोग नहीं किया जाता है। ऐसा विशेष रूप से मौसम, हवा, बारिश आदि प्रकृति की आपदाओं के प्रभाव से होता है।

(2) कानूनी अधिकार की समाप्ति-व्यवसाय के लिए कुछ परिसम्पत्तियों का मूल्य उनको उपयोग करने का करार, पूर्व निश्चित समय की समाप्ति पर खत्म हो जाता है। ऐसी परिसम्पत्तियों के उदाहरण हैं पेटेन्ट, कॉपीराइट, पेट्टा आदि। व्यवसाय के लिए इनकी उपयोगिता उनको प्राप्त कानूनी समर्थन के हटते ही समाप्त हो जाती है।

(3) अप्रचलन: अप्रचलन से आशय है किसी सम्पत्ति का पुराना हो जाना। दिन-प्रतिदिन होने वाले आविष्कारों के कारण उत्पादन के क्षेत्र में नई तकनीकों का विकास होता है जिससे नई-नई मशीनें

व उपकरण बाजार में आते रहते हैं। इससे पुरानी मशीनों की उपयोगिता कम हो जाती है और इनके मूल्य में कमी होने लगती है।

(4) असामान्य तत्वं किसी भी परिसम्पत्ति की उपयोगिता में कमी कुछ असामान्य कारकों से भी हो सकती है, जैसे आग से दुर्घटना, भूचाल, बाढ़ आदि। दुर्घटनाजन्य हानि स्थायी होती है लेकिन लगातार या क्रमिक नहीं होती। उदाहरण के लिए एक दुर्घटनाग्रस्त कार का मरम्मत के पश्चात भी बाजार में पहले वा यद्यपि इसको उपयोग में नहीं लाया गया है।

(5) रिक्तता: कुछ सम्पत्तियाँ ऐसी होती हैं कि उनमें से माल निकालते-निकालते रिक्तता आ जाती है। एक निश्चित समय के बाद या तो माल निकालना अलाभप्रद हो जाता है या समाप्त हो जाता है। जैसे - तेल एवं गैस के कुएँ, खानें आदि।

प्रश्न 2 हास की सरल रेखा विधि एवं क्रमागत मूल्य-हास विधि की विस्तार से चर्चा कीजिए। दोनों में अन्तर भी बताइए तथा उन परिस्थितियों को भी बताइए जिनमें ये उपयोगी हैं।

उत्तर -

(1) सीधी रेखा पद्धति अथवा स्थायी किस्त विधि (Straight Line Method or Fixed Instalment Method): इस विधि को मूल लागत विधि तथा सरल रेखा विधि भी कहते हैं। इस विधि में प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली हास की राशि एक समान रहती है। सम्पत्ति की मूल लागत पर एक निश्चित प्रतिशत से प्रतिवर्ष मूल्य-हास काटा जाता है। सम्पत्ति का जीवन-काल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य उसके अवशिष्ट मूल्य के बराबर रह जाता है।

मूल्य-हास की गणना करने का निम्न सूत्र है:

$$\text{मूल्य हास} = \frac{\text{सम्पत्ति की मूल लागत} - \text{अवशिष्ट मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवनकाल}}$$

यह विधि उन सम्पत्तियों के लिए प्रयोग में लायी जाती है, जिनका मूल्य सामान्यतः कम होता है तथा मरम्मत एवं नवीनीकरण व्यय भी कम होते हैं, जैसे - फर्नीचर, एकस्व, कॉपीराइट आदि। स्थायी किस्त विधि के लाभ (Advantages):

1. यह विधि बहुत सरल है अतः इसे अपनाना व समझना आसान है।

2. प्रतिवर्ष अपलिखित किया जाने वाला मूल्य-हास समान रहता है।

स्थायी किस्त विधि के दोष (Disadvantages):

1. इस विधि में सम्पत्ति क्रय करने में लगाई गयी ब्याज की राशि का कोई प्रावधान नहीं है।
2. सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त हो जाने पर नई मशीन खरीदने की व्यवस्था नहीं है।
3. इस विधि में हास एवं मरम्मत के खर्चों का प्रभाव लाभ-हानि खाते पर समान नहीं पड़ता है।

(2) क्रमागत हास विधि (Diminishing Balance Method): इस विधि में प्रतिवर्ष हास की राशि की गणना सम्पत्ति के घटे हुए मूल्य पर की जाती है। इससे मूल्य-हास की राशि प्रतिवर्ष कम हो जाती है। इस विधि के अनुसार प्रथम वर्ष का मूल्य हास सम्पत्ति की मूल लागत पर, दूसरे वर्ष का हास मूल लागत में से प्रथम वर्ष का मूल्य-हास कम करने के बाद शेष राशि पर, तीसरे वर्ष शेष राशि पर और इसी प्रकार प्रति वर्ष सम्पत्ति के जीवन काल तक काटते जाते हैं।

उदाहरण (Example): एक सम्पत्ति का मूल्य 2,00,000 ₹ है तथा इस पर क्रमागत विधि के अनुसार 10% प्रतिवर्ष की दर से लगाया जाता है। इसमें हास की राशि की गणना निम्न प्रकार की जायेगी

1. हास (First Year) = $2,00,000 \times 10/100 = 20,000$
2. अपलिखित मूल्य (Written Down Value)
3. $2,00,000 - 20,000 = 1,80,000$
4. हास (Second Year) = $1,80,000 \times 10/100 = 18,000$
5. अपलिरि = $1,80,000 - 18,000 = 1,62,000$
6. तृतीय वर्ष (Third Year) = $1,62,000 - 16,200$
7. अपलिखित मूल्य = 1,45,800₹

स्पष्ट है कि हास की राशि प्रतिवर्ष घटती रहती है। इस विधि में हास की दर की गणना निम्न सूत्र से की जाती है:

$$R = \left[1 - n \sqrt[n]{\frac{s}{c}} \right] \times 100$$

- R = हास की दर (Rate of Depreciation)
- s = अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value)
- c = सम्पत्ति की मूल लागत (Original Cost of Assets)
- n = सम्पत्ति का अनुमानित जीवन काल (Estimated Life of the Asset)

क्रमागत हास विधि के लाभ (Advantages):

1. यह विधि भी सरल है।
2. आयकर अधिनियम कर के लिए प्रावधान को स्वीकार करता है।
3. यह विधि स्थायी सम्पत्तियों के लिए उत्तम होती है क्योंकि यह अधिक समय तक चलती है।
4. चूँकि प्रारम्भ के वर्षों में लागत का बड़ा भाग समाप्त कर दिया जाता है, अतः अप्रचलन के कारण हानि कम हो जाती है।

क्रमागत हास विधि के दोष (Disadvantages):

1. सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए व्यय की गई राशि पर इसमें भी ब्याज का ध्यान नहीं रखा जाता है।
2. सम्पत्ति के प्रतिस्थापन पर इसमें भी सम्पत्ति क्रय करने के लिए राशि का प्रबन्ध नहीं होता है।

स्थायी किस्त विधि एवं क्रमागत हास विधि में अन्तर:

खाते का नाम	स्थायी किस्त विधि	क्रमागत शेष विधि
1. आधार	इस विधि में हास मूल लागत पर लगता है।	इस विधि में ह्रास शेष पुस्तक मूल्य पर लगता है।
2. वार्षिक हास	इसमें प्रतिवर्ष हास की राशि समान रहती है।	इस विधि में प्रतिवर्ष हास की राशि घटती रहती है।
3. उपयुक्तता	यह विधि उन सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त होती है जिसमें मरम्मत के कम खर्चे होते हैं तथा अप्रचलन की सम्भावना कम होती है।	यह विधि उन सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त है जिन

4.	आयकर यह विधि आयकर अधिनियम के अन्तर्गत मान्य कानून द्वारा नहीं है। मान्य	पर तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है तथा समय के साथ मरम्मत व्यय बढ़ता है।
----	--	--

प्रश्न 3 हास के लेखन की दोनों पद्धतियों का विस्तार से वर्णन कीजिए। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि भी दीजिए।

उत्तर - हास के अभिलेखन की पद्धतियाँ स्थायी परिसम्पत्तियों पर हास का लेखा पुस्तकों में अभिलेखन की दो पद्धतियाँ हैं

1. परिसम्पत्ति खाते पर हास का लगाया जाना
2. हास पर प्रावधान खाता/संचित हास खाता बनाना।

इनका वर्णन निम्न प्रकार है:

(1) परिसम्पत्ति खाते पर हास का लगाना जाना इस पद्धति के अनुसार हास को परिसम्पत्ति की मूल लागत से घटाया जाता है (परिसम्पत्ति खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है) व लाभ-हानि खाते पर भार लगाया जाता है (नाम पक्ष में लिखा जाता है)। इस विधि में रोजनामचा प्रविष्टियाँ अग्र प्रकार होंगी

(1) सम्पत्ति को खरीदने पर

Assets A/c To Bank/Vendor A/c (Assets purchased)	Dr.			
--	-----	--	--	--

(2) प्रत्येक वर्ष के अन्त में—

(i) प्रतिवर्ष हास की राशि से

Depreciation A/c To Assets A/c (Depreciation charged @.....)	Dr.			
--	-----	--	--	--

(ii) हास खाते को बन्द करने पर

Profit & Loss A/c To Depreciation A/c (Depreciation written off)	Dr.			
--	-----	--	--	--

(3) सम्पत्ति को बेचने पर

Bank A/c To Assets A/c (Assets sold)	Dr.			
--	-----	--	--	--

(2) हास पर प्रावधान खाता/संचित हास खाता बनाना-इस विधि में परिसम्पत्ति पर लगाई गई हास राशि एक अलग खाते में संचित होती है जिसे हास पर प्रावधान अथवा संचित हास कहते हैं। हास की राशि के इस प्रकार से संचयन के कारण परिसम्पत्ति खाता किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होता है तथा इसे इसके उपयोगी जीवनकाल के हर आने वाले वर्षों में लागत मूल्य पर ही दर्शाया जाता है।

इस विधि की निम्न विशेषताएँ हैं:

1. परिसम्पत्ति खाता इसके पूरे जीवनकाल में इसे मूल लागत पर ही दर्शाता है।
2. हास की राशि को प्रत्येक लेखांकन वर्ष के अन्त में परिसम्पत्ति खाते में समायोजन करने के स्थान पर एक अलग खाते में समेकित किया जाता है।

इस विधि में निम्न रोजनामचा प्रविष्टियाँ की जाती हैं:

(1) सम्पत्ति क्रय करने पर:

Assets A/c To Bank/Vendor A/c	Dr.		
(2) प्रत्येक वर्ष के अन्त में निम्न प्रकार दो प्रविष्टियाँ की जायेंगी—			
(i) हास का आयोजन करने का लेखा—			
Depreciation A/c To Provision for Dep. A/c (Dep. credited to Provision for Dep. a/c)	Dr.		
(ii) हास खाते को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित करने का लेखा—			
Profit & Loss A/c To Depreciation A/c (Dep. charged to P & L a/c)	Dr.		

इस विधि में सम्पत्ति खाता यथावत बना रहता है और खातों में तब तक अपनी मूल लागत पर दिखाया जाता है जब तक सम्पत्ति को बेचा या हटाया नहीं जाता है। दूसरी ओर हास आयोजन खाते में क्रेडिट की ओर दिखायी जा रही राशि अब तक लगे संचित हास (accumulated depreciation) की द्योतक है। जब इस सम्पत्ति को बेचा या हटाया जाता है तो निम्न लेखा बनाकर हास प्रावधान खाते को बन्द किया जाता है

Provision for Dep. A/c To Asset A/c	Dr.		
--	-----	--	--

हास प्रावधान खाते को तुलन पत्र में दो प्रकार से दिखाया जा सकता है या तो स्वयं सम्पत्ति शेष से हास प्रावधान खाता घटाकर या हास प्रावधान खाते को तुलन पत्र के दायित्व पक्ष की ओर दिखाकर। प्रश्न 4 हास राशि के निर्धारक तत्वों को समझाइए।

उत्तर – किसी भी सम्पत्ति के मूल्य-हास की राशि के निर्धारक तत्व निम्न प्रकार हैं:

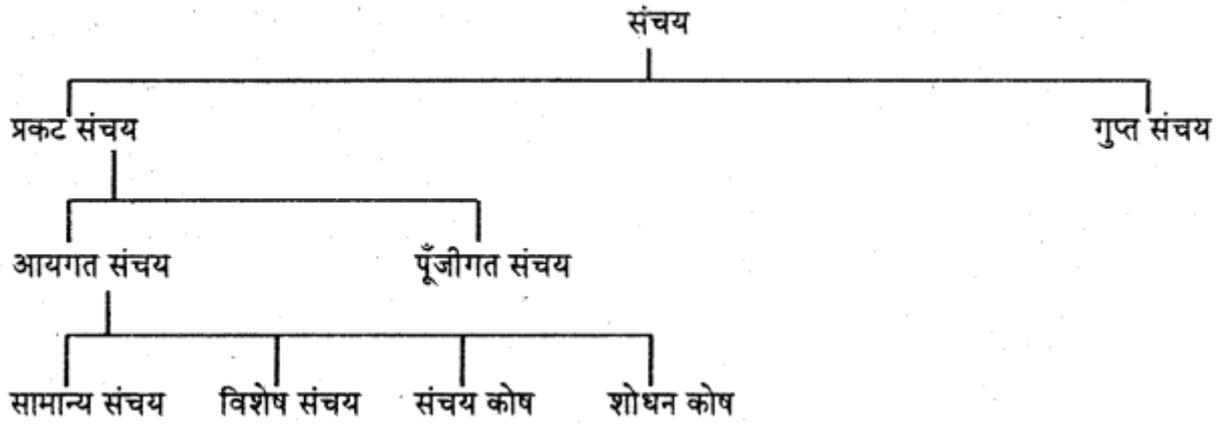
- परिसम्पत्ति की लागत: इस मूल्य में सम्पत्ति के क्रय-मूल्य से लेकर सम्पत्ति को लाने, प्रतिस्थापन करने एवं कार्य योग्य बनाने तक के समस्त व्ययों को जोड़ा जाता है।

- अनुमानित जीवन काल: यह वह अवधि होती है जब तक सम्पत्ति को व्यापार में प्रयोग करने का अनुमान है इसके अन्तर्गत सम्पत्ति के भौतिक जीवन पर नहीं बल्कि उपयोगी जीवन पर विचार किया जाता है।
- अनुमानित अवशिष्ट मूल्य यह सम्पत्ति का वह मूल्य होता है जो कि सम्पत्ति का जीवनकाल समाप्त होने पर सम्पत्ति को बेचने से प्राप्त होता है। सम्पत्ति के लागत मूल्य में से अवशिष्ट मूल्य घटाकर ही हास की गणना की जाती है।
- विनियोजित पूँजी पर ब्याज-यदि सम्पत्ति को क्रय करने के बजाय उस धनराशि को अन्यत्र विनियोजित कर दिया जाता तो ब्याज की प्राप्ति होती इस तथ्य को भी मूल्यवान सम्पत्तियों पर हास की रकम ज्ञात करते समय ध्यान में रखना पड़ता है।
- कम्पनी अधिनियम की व्यवस्थाएँ हास की गणना करते समय कम्पनी अधिनियम में हास सम्बन्धी जो व्यवस्थाएँ दी हुई हैं उनका भी ध्यान रखना चाहिए।
- सम्पत्ति का उपयोग किसी भी सम्पत्ति के मूल्य-हास पर उस सम्पत्ति के उपयोग करने के ढंग का भी प्रभाव पड़ता है।
- सम्पत्ति का स्वभाव मूल्य हास के निर्धारण में सम्पत्ति के स्वभाव का भी प्रभाव पड़ता है।
- सम्पत्ति के अप्रचलन की सम्भावना किसी भी सम्पत्ति पर हास का निर्धारण करते समय उस सम्पत्ति के अप्रचलन की कितनी सम्भावनाएँ हैं इस बात को ध्यान में रखकर ही हास की राशि का निर्धारण किया जाता

प्रश्न 5 विभिन्न प्रकार के संचयों के नाम देकर इनको विस्तार से समझाइए।

उत्तर – संचय का अर्थ (Meaning of Reserve): भारतीय कम्पनी अधिनियम में दी गई संचय की परिभाषा के अनुसार : "संचय के अन्तर्गत वह राशि सम्मिलित की जाती है जो सम्पत्ति के मूल्य-हास, नवीनीकरण या किसी ज्ञात दायित्व के लिए आयोजन न हो। "

संचय के प्रकार (Kinds of Reserves): संचय को अनेक आधारों पर बाँटा जा सकता है। यहाँ हमने संचय का एक सामान्य वर्गीकरण अग्र प्रकार दिया



1. प्रकट संचय (Open Reserve): प्रकट संचय से आशय उन संचयों से है जो तुलन पत्र के दायित्व पक्ष - में विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाये जाते हैं।

प्रकट संचय दो प्रकार के होते हैं:

(A) पूँजीगत संचय (Capital Reserve) भारतीय कम्पनी अधिनियम की छठी अनुसूची के भाग. तीन के अनुसार, "पूँजी संचय में ऐसी कोई भी राशि शामिल नहीं की जाती है जिसको लाभ-हानि खाते में वितरित किया जा सके। अतः पूँजीगत संचय वह संचय है जिन्हें पूँजीगत लाभों से बनाया जाता है।"

(B) आयगत संचय (Revenue Reserve) कम्पनी अधिनियम के अनुसार, "आयगत संचय वह है जो पूँजीगत संचय नहीं है। इस प्रकार ये संचय तीन प्रकार के होते हैं

1. सामान्य संचय (General Reserve): किसी भावी आर्थिक संकट या क्षति से रक्षार्थ लाभों में से बचाये गये एक भाग को सामान्य संचय कहते हैं।
2. विशेष संचय (Specific Reserve): यह भविष्य के किसी कार्य विशेष को पूरा करने के लिए लाभों में से एक भाग बचाकर अलग रखा जाता है, तो ऐसे संचय को विशेष संचय कहते हैं।
3. संचय कोष (Reserve Fund): जब किसी सामान्य या विशेष संचय की राशि का विनियोग व्यवसाय में करने के बजाय व्यवसाय के बाहर श्रेष्ठ प्रतिभूतियों में कर दिया जाता है, तो ऐसे सामान्य या विशेष संचय को 'संचय कोष' कहते हैं।

2. शोधन कोष (Sinking Fund): किसी विशेष उद्देश्य से लाभों में से बनाये गये संचय की राशि का जब व्यवसाय के बाहर श्रेष्ठ प्रतिभूतियों में इस प्रकार विनियोग किया जाता है कि एक निश्चित

तिथि को उन विनियोगों से एक निश्चित राशि उस विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्राप्त हो सके, तो ऐसे संचय को शोधन कोष कहते हैं।

3. गुप्त संचय (Secret Reserve): गुप्त संचय वे संचय हैं जो अपनी विद्यमानता को तो प्रकट करते हैं परन्तु चिठे में उनका अस्तित्व नजर नहीं आता है।

प्रश्न 6 प्रावधान क्या है? उनका सृजन कैसे किया जाता है? संदिग्ध ऋणों के प्रावधान का लेखांकन कैसे करेंगे?

उत्तर – प्रावधान का अर्थ (Meaning of Provision): प्रावधान से आशय है व्यवस्था करना। व्यवसाय में कुछ खर्चे, हानियाँ वर्तमान लेखा वर्ष से सम्बन्धित होती हैं किन्तु यह व्यय अभी किये नहीं गये हैं इसलिए इनकी राशि सुनिश्चित नहीं होती है। सही शुद्ध लाभ निकालने के लिए ऐसी मदों के लिए प्रावधान करना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, एक व्यापारी को जो उधार विक्रय करता है उसे पता है कि चालू वर्ष के कुछ देनदार या तो कुछ भी भुगतान नहीं करेंगे या आंशिक भुगतान करेंगे।

सतर्कता एवं रूढ़िवादिता की संकल्पना के अनुसार सही एवं उचित लाभ-हानि की गणना के लिए व्यापारी देनदारों से वसूली के समय संभावित हानि से बचाव के लिए संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान करता है। इसी प्रकार से स्थाई परिसम्पत्तियों की संभावित मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए प्रावधान कर सकता है। भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार प्रावधान अथवा आयोजन से आशय उस राशि से है जो

1. किसी स्थायी या अस्थायी सम्पत्ति पर हास लगाने के लिये, उसके मूल्य में कमी होने के लिए या उसे पुनः स्थापित करने के लिए निकाली जाती है।
2. किसी ज्ञात दायित्व को पूरा करने के लिए निकाली जाती है।

आयोजन के उदाहरण:

1. हास के लिए प्रावधान: व्यवसाय में काम आने वाली सम्पत्तियाँ समय के साथ घिसती जाती हैं या उनका मूल्य कम होता जाता है। सही लाभ-हानि की गणना के लिए सम्पत्तियों पर हास के लिए प्रावधान किया जाता

2. डूबत तथा संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन (Provision for Bad & Doubtful Debts): जब चिट्ठा बनाते समय देनदार राशि चुकाने में असमर्थ होते हैं तो उनके द्वारा न चुकायी जाने वाली रकम के लिए आयोजन बनाया जाता है। देनदार द्वारा जो राशि प्राप्त नहीं होती है उसे फर्म द्वारा रोका नहीं जा सकता, लेकिन उससे बचने के लिए आयोजन अवश्य किया जा सकता है। इस आयोजन को ही संदिग्ध ऋण आयोजन कहते हैं।
3. मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए आयोजन (Provision for Repairs and Renewals): व्यवसाय में जब कोई नई सम्पत्ति खरीदी जाती है अथवा उसका निर्माण किया जाता है तो शुरू के वर्षों में मरम्मत व घिसावट कम होती है और आगामी वर्षों में रकम बढ़ती रहती है। अतः मरम्मत व नवीनीकरण की रकम का भार लाभ-हानि खाते में समान रहे इसलिए मरम्मत व नवीनीकरण के आयोजन का सृजन किया जाता है।
4. देनदारों पर छूट के लिए आयोजन (Provision for Discount on Debtors): व्यापारी द्वारा अपने देनदारों को नकद बट्टा प्रदान किया जाता है। बट्टा इसलिए दिया जाता है कि देनदार राशि का भुगतान निर्धारित तिथि पर कर दे। यह बट्टा व्यापार के लिए खर्चा है।
5. करों के लिए आयोजन (Provision for Income Tax): व्यापारी द्वारा समय-समय पर करों का भुगतान किया जाता है। इसलिए करों के आयोजन का सृजन किया जाता है।

प्रावधान का सृज: व्यय एवं हानि के लिए प्रावधान की राशि वर्तमान अवधि की आगम पर खर्चा है। प्रावधान सृजन व्यय के मिलान को सुनिश्चित करता है जिससे सही लाभ निकल आता है। लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में लिखने से प्रावधान का सृजन होता है। अर्थात् लाभ-हानि खाते को नाम करके तथा सम्बन्धित प्रावधान खाते को जमा करके प्रावधान का सृजन किया जाता है।

संदिग्ध ऋणों के प्रावधान का लेखांकन:

(i) प्रावधान करने पर—

Profit & Loss A/c To Provision for Bad & Doubtful Debts A/c (Provision made for doubtful debts)	Dr.			
---	-----	--	--	--

(ii) राशि डूबने पर—

Bad Debts A/c To Debtors A/c (Being bad debts written off)	Dr.			
--	-----	--	--	--

(iii) डूबत ऋण एवं नये डूबत ऋण की राशि को संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन राशि को हस्तान्तरित (Transfer) करने पर:

Provision for Bad & Doubtful Debts A/c To Bad Debts A/c (Being Bad Debts A/c transferred)	Dr.			
---	-----	--	--	--

यदि पुरानी प्रावधान राशि ज्यादा है अर्थात् यह नयी प्रावधान राशि + डूबत ऋण की राशि से ज्यादा है तो आधिक्य को नियमानुसार लाभ-हानि खाते में जमा कर दिया जाता है।

(iv)	Provision for Bad & Doubtful Debts A/c To Profit & Loss A/c	Dr.		
------	--	-----	--	--

आंकिक प्रश्न:

प्रश्न 1 01 अप्रैल, 2013 को बजरंग मार्बल्स ने 2,80,000 ₹ की मशीन खरीदी तथा 10,000 ₹ भाड़े पर एवं 10,000 ₹ स्थापना पर व्यय किये। अनुमान लगाया गया कि इसका उपयोगी जीवन 10 वर्ष एवं 10 वर्ष की समाप्ति पर इसका अवशिष्ट मूल्य 20,000 ₹ होगा।

(क) मूल्य हास की सीधी रेखा विधि से पहले चार वर्षों का मशीन खाता एवं हास खाता बनाइए। खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते हैं।

(ख) सीधी रेखा विधि से हास लगाकर प्रथम चार वर्षों के लिए मशीन खाता, हास खाता एवं हास पर प्रावधान खाता (या संचित हास खाता) बनाइए। खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते हैं।

उत्तर -

$$\text{मूल्य हास} = \frac{\text{कुल लागत} - \text{अवशिष्ट मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का जीवन काल}}$$

$$\text{मूल्य हास} = \frac{2,80,000 + 10,000 + 10,000 - 20,000}{10}$$

$$= \frac{2,80,000}{10} = 28,000$$

(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2013			2014		
1 April	To Bank (Cost)	2,80,000	31 Mar.	By Depreciation	28,000
"	To Bank (Carriage)	10,000	"	By Balance c/d	2,72,000
"	To Bank (Installation)	10,000			
		3,00,000			3,00,000
2014			2015		
1 April	To Balance b/d	2,72,000	31 Mar.	By Depreciation	28,000
		2,72,000	"	By Balance c/d	2,44,000
					2,72,000
2015			2016		
1 April	To Balance b/d	2,44,000	31 Mar.	By Depreciation	28,000
		2,44,000	"	By Balance c/d	2,16,000
					2,44,000
2016			2017		
1 April	To Balance b/d	2,16,000	31 Mar.	By Depreciation	28,000
		2,16,000	"	By Balance c/d	1,88,000
					2,16,000

हास खाता

(Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014			2014		
31 Mar.	To Machinery A/c	28,000	31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2015			2015		
31 Mar.	To Machinery A/c	28,000	31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2016			2016		
31 Mar.	To Machinery A/c	28,000	31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2017			2017		
31 Mar.	To Machinery A/c	28,000	31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000

(ख) जब हास प्रावधान खाता बनाया जाता है।

मशीनरी खाता

(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2013 1 April	To Bank (Cost)	2,80,000	2014 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
"	To Bank (Carriage)	10,000			
"	To Bank (Installation)	10,000			
		3,00,000			3,00,000
2014 1 April	To Balance b/d	3,00,000	2015 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
		3,00,000			3,00,000
2015 1 April	To Balance b/d	3,00,000	2016 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
		3,00,000			3,00,000
2016 1 April	To Balance b/d	3,00,000	2017 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
		3,00,000			3,00,000

**हास खाता
(Depreciation A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 31 Mar.	To Prov. for Dep. A/c	28,000	2014 31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2015 31 Mar.	To Prov. for Dep. A/c	28,000	2015 31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2016 31 Mar.	To Prov. for Dep. A/c	28,000	2016 31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000
2017 31 Mar.	To Prov. for Dep. A/c	28,000	2017 31 Mar.	By Profit & Loss A/c	28,000
		28,000			28,000

**हास आयोजन खाता
(Provision for Depreciation A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 31 Mar.	To Balance c/d	28,000	2014 31 Mar.	By Depreciation	28,000
		28,000			28,000

2015 31 Mar.	To Balance c/d	56,000	2014 1 April	By Balance b/d	28,000
			2015 31 Mar.	By Depreciation	28,000
		56,000			56,000
2016 31 Mar.	To Balance c/d	84,000	2015 1 April	By Balance b/d	56,000
			2016 31 Mar.	By Depreciation	28,000
		84,000			84,000
2017 31 Mar.	To Balance c/d	1,12,000	2016 1 April	By Balance b/d	84,000
			2017 31 Mar.	By Depreciation	28,000
		1,12,000			1,12,000

प्रश्न 2 01 जुलाई, 2017 को अशोक लि. ने 1,08,000 ₹ की मशीन खरीदी एवं 12,000 ₹ इसकी स्थापना पर खर्च किये। क्रय के समय अनुमान लगाया गया कि इसका सक्रिय वाणिज्यिक जीवन 12 वर्ष होगा एवं 12 वर्ष के पश्चात् इसका अवशिष्ट मूल्य 12,000 ₹ होगा। अशोक लि. की लेखापुस्तकों में प्रथम तीन वर्षों का मशीन खाता एवं हास खाता बनाइए यदि हास सीधी रेखा विधि से लगाया जा रहा हो। खाते प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं।

उत्तर -

$$\text{मूल्य हास} = \frac{\text{कुल लागत} - \text{अवशिष्ट मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का जीवन काल}}$$

$$\text{मूल्य हास} = \frac{1,08,000 + 12,000 - 12,000}{12} = \frac{1,08,000}{12}$$

= 9000 per year Description

**मशीनरी खाता
(Machinery A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 1 July	To Bank (Cost) To Bank (Installation exp.)	1,08,000 12,000	2017 31 Dec.	By Depreciation (6 Month)	4,500
		1,20,000	"	By Balance c/d	1,15,500
					1,20,000
2018 1 Jan.	To Balance b/d	1,15,500	2018 31 Dec.	By Depreciation	9,000
		1,15,500	"	By Balance c/d	1,06,500
					1,15,500
2019 1 Jan.	To Balance b/d	1,06,500	2019 31 Dec.	By Depreciation	9,000
		1,06,500	"	By Balance c/d	97,500
					1,06,500
2020 1 Jan.	To Balance b/d	97,500			

हास खाता (Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 31 Dec.	To Machinery A/c	4,500	2017 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	4,500
		4,500			4,500
2018 31 Dec.	To Machinery A/c	9,000	2018 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	9,000
		9,000			9,000
2019 31 Dec.	To Machinery A/c	9,000	2019 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	9,000
		9,000			9,000

प्रश्न 3 01 अक्टूबर, 2017 को रिलायंस लि. ने 56,000 ₹ में एक पुरानी मशीन खरीदी एवं इसके परिचालन में लाने से पूर्व इस पर 28,000 ₹ इसकी कायापलट एवं स्थापना पर व्यय किये। अनुमान लगाया गया कि इसके 15 वर्ष के उपयोगी जीवन के अन्त में इसको 6,000 ₹ अवशिष्ट वसूल पर

बेचा जाएगा। साथ ही यह भी अनुमान लगाया गया कि 6,000 ₹ के अवशिष्ट मूल्य को प्राप्त करने हेतु 1,000 ₹ व्यय करने होंगे। सीधी व्यय से हास लगाकर पहले तीन वर्ष का मशीन खाता एवं हास पर प्रावधान खाता बनाइए। खाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किए जाते हैं।

उत्तर -

$$\text{मूल्य हास} = \frac{\text{कुल लागत - अवशिष्ट मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का जीवन काल}}$$

$$\text{मूल्य हास} = \frac{56,000 + 28,000 - (6,000 - 1,000)}{15}$$

$$= \frac{79,000}{15} = 5,270(\text{App}) \text{ per year}$$

मशीनरी खाता (Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 1 Oct.	To Bank A/c (Cost)	56,000	2017 31 Dec.	By Balance c/d	84,000
"	To Bank (Installation)	28,000			
		84,000			84,000
2018 1 Jan.	To Balance b/d	84,000	2018 31 Dec.	By Balance c/d	84,000
		84,000			84,000
2019 1 Jan.	To Balance b/d	84,000	2019 31 Dec.	By Balance c/d	84,000
		84,000			84,000

हास आयोजन खाता
(Provision for Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 31 Dec.	To Balance c/d	1,320	2017 31 Dec.	By Depreciation (amt. rounded off)	1,320
		1,320			1,320
2018 31 Dec.	To Balance c/d	6,590	2018 1 Jan.	By Balance b/d	1,320
		6,590	2018 31 Dec.	By Depreciation	5,270
					6,590

2019 31 Dec.	To Balance c/d	11,860	2019 1 Jan.	By Balance b/d	6,590
		11,860	31 Dec.	By Depreciation	5,270
					11,860
			2020 1 Jan.	By Balance b/d	11,860

प्रश्न 4 बरलिया लि. ने 01 जुलाई, 2015 को एक पुरानी मशीन 56,000 ₹ में खरीदी तथा 24,000 ₹ इसकी मरम्मत एवं इसको लगाने पर व्यय किए एवं 5,000 ₹ इसको लाने के लिए भाड़े पर व्यय किये। 01 सितम्बर, 2016 को बरलिया लि. ने 2,50,000 ₹ में एक और मशीन खरीदी एवं 10,000 ₹ इसकी स्थापना पर व्यय किये।

(क) मशीन पर 10% प्रतिवर्ष की दर से मूल लागत पद्धति पर प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को हास लगाना है। वर्ष 2015 से 2018 तक का मशीन खाता एवं मूल्य हास खाता बनाइए।

(ख) 2015 से 2018 तक का मशीन खाता एवं मूल्य हास खाता बनाइए यदि मशीन पर हास 10% वार्षिक दर से प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को इसके हासित मूल्य पर लगाया जाता है।

उत्तर -

मशीनरी खाता (Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 1 July	To Bank A/c (Cost)	56,000	2015 31 Dec.	By Depreciation	4,250
"	To Bank (Repair)	24,000	"	By Balance c/d	80,750
"	To Bank (Carriage)	5,000			
		85,000			85,000
2016 1 Jan.	To Balance b/d	80,750	2016 31 Dec.	By Depreciation (8,500 + 8,667)	17,167
1 Sept.	To Bank (Cost)	2,50,000		I II	
"	To Bank (Installation charge)	10,000	"	By Balance c/d (72250 + 251333)	3,23,583
		3,40,750			3,40,750

2017 1 Jan.	To Balance b/d (72250 + 251333)	3,23,583	2017 31 Dec.	By Depreciation (8,500 + 26,000)	34,500
			"	By Balance c/d (63750 + 225333)	2,89,083
		3,23,583			3,23,583
2018 1 Jan.	To Balance b/d (63750 + 225333)	2,89,083	2018 31 Dec.	By Depreciation (8,500+26,000)	34,500
			"	By Balance c/d	2,54,583
		2,89,083			2,89,083

हास खाता
(Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 31 Dec.	To Machinery A/c	4,250	2015 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	4,250
		4,250			4,250
2016 31 Dec.	To Machinery A/c	17,167	2016 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	17,167
		17,167			17,167
2017 31 Dec.	To Machinery A/c	34,500	2017 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	34,500
		34,500			34,500
2018 31 Dec.	To Machinery A/c	34,500	2018 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	34,500
		34,500			34,500

(ख) क्रमागत शेष विधि (Diminishing Balance Method):

मशीनरी खाता
(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 1 July	To Bank A/c (Cost)	56,000	2015 31 Dec.	By Depreciation	4,250
"	To Bank (Repair)	24,000	"	By Balance c/d	80,750
"	To Bank (Carriage)	5,000			
		85,000			85,000

2016			2016		
1 Jan.	To Balance b/d	80,750	31 Dec.	By Depreciation (8075 + 8667)	16,742
1 Sept.	To Bank (Cost)	2,50,000	"	By Balance c/d (72675 + 251333)	3,24,008
"	To Bank (Installation)	10,000			
		3,40,750			3,40,750
2017			2017		
1 Jan.	To Balance b/d (72675+251333)	3,24,008	31 Dec.	By Depreciation (7268 + 25133)	32,401
			"	By Balance c/d (65407 + 226200)	2,91,607
		3,24,008			3,24,008
2018			2018		
1 Jan.	To Balance b/d (65407+226200)	2,91,607	31 Dec.	By Depreciation (6541+22620)	29,161
			"	By Balance c/d (58866 + 203580)	2,62,446
		2,91,607			2,91,607

हास खाता
(Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
31 Dec.	To Machinery A/c	4,250	31 Dec.	By Profit & Loss A/c	4,250
		4,250			4,250
2016			2016		
31 Dec.	To Machinery A/c	16,742	31 Dec.	By Profit & Loss A/c	16,742
		16,742			16,742
2017			2017		
31 Dec.	To Machinery A/c	32,401	31 Dec.	By Profit & Loss A/c	32,401
		32,401			32,401
2018			2018		
31 Dec.	To Machinery A/c	29,161	31 Mar.	By Profit & Loss A/c	29,161
		29,161			29,161

प्रश्न 5 गंगा लि. ने 1 जनवरी, 2014 को 5,50,000 ₹ में एक मशीन खरीदी। इसकी स्थापना पर 50,000 ₹ व्यय किये गये। 1 सितम्बर, 2014 को 3,70,000 ₹ में एक और मशीन खरीदी। 01

मई, 2015 को 8,40,000 ₹ (स्थापना व्यय सहित) में एक और मशीन खरीदी। प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को 10% वार्षिक से सीधी रेखा पद्धति से हास लगाया गया।

(क) वर्ष 2014, 2015, 2016 एवं 2017 के लिए मशीन खाता एवं मूल्य हास खाता बनाएँ।

(ख) यदि हास राशि को हास पर प्रावधान में संचित कर लिया जाए तो वर्ष 2014, 2015, 2016 एवं 2017 के लिए मशीन खाता एवं मशीन पर हास प्रावधान खाता बनाएँ।

उत्तर -

मशीनरी खाता (Machinery A/c)					
Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014			2014		
1 Jan.	To Bank (Cost)	5,50,000	31 Dec.	By Depreciation a/c (60000 + 12333)	72333
"	To Bank (Installation)	50,000	"	By Balance c/d (5,40,000+3,57,667)	8,97,667
1 Sep.	To Bank (Cost)	3,70,000			9,70,000
		9,70,000			9,70,000
2015			2015		
1 Jan.	To Balance b/d	8,97,667	31 Dec.	By Depreciation a/c (60000 + 37000 + 56000)	1,53,000
1 May	To Bank (Cost)	8,40,000	"	By Balance c/d (480000 + 320667 + 784000)	15,84,667
		17,37,667			17,37,667
2016			2016		
1 Jan.	To Balance b/d	15,84,667	31 Dec.	By Depreciation a/c (60000 + 37000 + 84,000)	1,81,000
		15,84,667	"	By Balance c/d (420000 + 283667 + 700000)	14,03,667
		15,84,667			15,84,667
2017			2017		
1 Jan.	To Balance b/d	14,03,667	31 Dec.	By Depreciation a/c (60,000 + 37,000 + 84,000)	1,81,000
		14,03,667	"	By Balance c/d (3,60,000 + 2,46,667 + 6,16,000)	12,22,667
		14,03,667			14,03,667

हास खाता
(Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 31 Dec.	To Machinery A/c	72,333	2014 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	72,333
		72,333			72,333
2015 31 Dec.	To Machinery A/c	1,53,000	2015 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	1,53,000
		1,53,000			1,53,000
2016 31 Dec.	To Machinery A/c	1,81,000	2016 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	1,81,000
		1,81,000			1,81,000
2017 31 Dec.	To Machinery A/c	1,81,000	2017 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	1,81,000
		1,81,000			1,81,000

(ख) जब मूल्य-हास प्रावधान खाता रखा जाता है।

मशीनरी खाता
(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 1 Jan.	To Bank (Cost)	5,50,000	2014 31 Dec.	By Balance c/d	9,70,000
"	To Bank (Installation)	50,000			
1 Sep.	To Bank (Cost) (II)	3,70,000			
		9,70,000			9,70,000
2015 1 Jan.	To Balance b/d	9,70,000	2015 31 Dec.	By Balance c/d	18,10,000
1 May	To Bank (Cost) (III)	8,40,000			
		18,10,000			18,10,000
2016 1 Jan.	To Balance b/d	18,10,000	2016 31 Dec.	By Balance c/d	18,10,000
		18,10,000			18,10,000
2017 1 Jan.	To Balance b/d	18,10,000	2017 31 Dec.	By Balance c/d	18,10,000
		18,10,000			18,10,000

Provision for Depreciation A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 31 Dec.	To Balance c/d	72,333	2014 31 Dec.	By Depr. A/c	72,333
		72,333			72,333
2015 31 Dec.	To Balance c/d	2,25,333	2015 1 Jan.	By Balance b/d	72,333
		2,25,333	31 Dec.	By Depr. A/c	1,53,000
		2,25,333			2,25,333
2016 31 Dec.	To Balance c/d	4,06,333	2016 1 Jan.	By Balance b/d	2,25,333
		4,06,333	31 Dec.	By Depr. A/c	1,81,000
		4,06,333			4,06,333
2017 31 Dec.	To Balance c/d	5,87,333	2017 1 Jan.	By Balance b/d	4,06,333
		5,87,333	31 Dec.	By Depr. A/c	1,81,000
		5,87,333			5,87,333

फर्नीचर खाता
(Furniture A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 1 Oct.	To Bank I st (Cost)	4,50,000	2015 31 Mar.	By Balance c/d	7,50,000
2015 1 Mar.	To Bank II nd (Cost)	3,00,000			7,50,000
		7,50,000			7,50,000
2015 1 April	To Balance b/d	7,50,000	2016 1 July	By Balance c/d	7,50,000
		7,50,000			7,50,000
2016 1 April	To Balance b/d	7,50,000	2016 1 July	By Furniture Disposal A/c	4,50,000
		7,50,000	2017 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
		7,50,000			7,50,000
2017 1 April	To Balance b/d	3,00,000			

प्रश्न 6 आजाद लि. ने 1 अक्टूबर, 2014 को 4,50,000 ₹ का फर्नीचर खरीदा। 01 मार्च, 2015 को इसने 3,00,000 ₹ का एक और फर्नीचर खरीदा। 1 जुलाई, 2016 को, 1 अक्टूबर, 2014 को खरीदा गया फर्नीचर 2,25,000 ₹ में बेच दिया। हास 15% प्रतिवर्ष की दर से क्रमागत पद्धति से लगाया जा रहा है। खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते हैं।

(i) वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2015, 31 मार्च, 2016 एवं 31 मार्च, 2017 को फर्नीचर खाता एवं संचित हास खाता बनाइए।

(ii) यह मानते हुए कि फर्नीचर निपटान खाता खोला गया है, फर्नीचर खाता एवं संचित हास खाता बनाइए।

उत्तर –

फर्नीचर खाता
(Furniture A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 1 Oct.	To Bank I st (Cost)	4,50,000	2015 31 Mar.	By Balance c/d	7,50,000
2015 1 Mar.	To Bank II nd (Cost)	3,00,000			
		<u>7,50,000</u>			<u>7,50,000</u>
2015 1 April	To Balance b/d	7,50,000	2016 1 July	By Balance c/d	7,50,000
		<u>7,50,000</u>			<u>7,50,000</u>
2016 1 April	To Balance b/d	7,50,000	2016 1 July	By Furniture Disposal A/c	4,50,000
			2017 31 Mar.	By Balance c/d	3,00,000
		<u>7,50,000</u>			<u>7,50,000</u>
2017 1 April	To Balance b/d	3,00,000			

संचित हास खाता
(Accumulated Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 31 Mar.	To Balance c/d	37,500	2015 31 Mar.	By Depreciation (33750+3750)	37,500
		37,500			37,500
2016 31 Mar.	To Balance c/d	1,44,375	2015 1 April	By Balance b/d	37,500
		1,44,375	2016 31 Mar.	By Depreciation (62438+44437)	1,06,875
					1,44,375
2016 1 July	To Furniture Disposal	1,09,456	2016 1 April	By Balance b/d	1,44,375
2017 31 Mar.	To Balance c/d	85,959	2017 31 Mar.	By Depreciation (13268+37772)	51,040
		1,95,415			1,95,415

फर्नीचर निपटान खाता
(Furniture Disposal Account)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2016 1 July	To Furniture a/c	4,50,000	2016 1 July	By Accumulated Depreciation	1,09,456
		4,50,000	"	By Bank	2,25,000
			"	By Profit & Loss	1,15,544
					4,50,000

प्रश्न 7 क्रिस्टल लि. के खातों में 01 जनवरी, 2015 को निम्न खाते शेष थे मशीनरी खाता

मशीनरी पर हास प्रावधान खाता 15,00,000 ₹

1 अप्रैल, 2015 को 5,50,000 ₹

01 जनवरी 2012 को 2,00,000 ₹ में क्रय की गई मशीन को 75,000 ₹ में बेच दिया। 1 जुलाई, 2015 को 6,00,000 ₹ में एक और नई मशीन खरीदी। मशीन पर हास 20% वार्षिक से सीधी रेखा

विधि से लगाना है तथा खाते प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किए जाते हैं। वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2015 को मशीन खाता एवं हास प्रावधान खाता बनाइए।

उत्तर -

**मशीन खाता
(Machinery Account)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
1 Jan.	To Balance b/d	15,00,000	1 April	By Prov. for Dep.	1,30,000
31 Mar.	To P & L	5,000	"	By Bank	75,000
1 July	To Bank A/c	6,00,000	31 Dec.	By Balance c/d	19,00,000
		21,05,000			21,05,000
2016					
1 Jan.	To Balance b/d	19,00,000			

**हास आयोजन खाता
(Provision for Depreciation A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
1 April	To Machinery A/c	1,30,000	1 Jan.	By Balance b/d	5,50,000
31 Dec.	To Balance b/d	7,50,000	1 April	By Depreciation (Machinery sold on 1st April)	10,000
		8,80,000	31 Dec.	By Depreciation (2,60,000 + 60,000)	3,20,000
					8,80,000
			2016		
			1 Jan.	By Balance b/d	7,50,000

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes) :

बेची गई मशीन पर लाभ-हानि की गणना

	₹
लागत 1 Jan., 2012 को	2,00,000
Less : हास 1 Jan. से 31 Dec. 2012 तक	40,000
	1 Jan. 2013 को शेष
	1,60,000
Less : हास 1 Jan. 2013 से 31 Dec. 2013 तक	40,000

1 Jan. 2014 को शेष	1,20,000
Less : हास 1 Jan. 2014 से 31 Dec., 2014 तक	40,000
1 Jan. 2015 को शेष	80,000
Less : हास 1 Jan. 2015 से 31 March, 2015 तक	10,000
मशीन का मूल्य	70,000
मशीन बेची	75,000
मशीन बेचने पर लाभ	5,000

प्रश्न 8 में, एकसैल कम्प्यूटर्स की लेखा पुस्तकों में कम्प्यूटर्स खाते का 01 अप्रैल, 2010 को 50,000 ₹ का (मूल लागत 1,20,000 ₹) नाम शेष है। 01 जुलाई, 2010 को इसने 2,50,000 ₹ का एक और कम्प्यूटर खरीदा। 01 जनवरी, 2011 को 30,000 ₹ में एक और कम्प्यूटर खरीदा। 1 अप्रैल, 2014 को 01 जुलाई, 2010 को खरीदा कम्प्यूटर प्रचलन से बाहर होने के कारण 20,000 ₹ में बेच दिया गया। 1 अगस्त, 2014 को 80,000 ₹ पर IBM कम्प्यूटर का एक नवीन संस्करण खरीदा। एकसैल कम्प्यूटर्स की पुस्तकों में वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2011, 2012, 2013, 2014 और 2015 को कम्प्यूटर खाता बनाइए। कम्प्यूटर पर 10% वार्षिक से सीधी रेखा विधि से हास लगाया जा रहा है।

उत्तर -

कम्प्यूटर खाता
(Computers A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2010			2011		
1 April	To Balance b/d	50,000	31 Mar.	By Depreciation a/c (12000+18750+750)	31,500
1 July	To Bank A/c	2,50,000	"	By Balance c/d (38000+231250+29250)	2,98,500
2011					3,30,000
1 Jan.	To Bank A/c	30,000			
		3,30,000			
2011			2012		
1 April	To Balance b/d (38,000+231250+29250)	2,98,500	31 Mar.	By Depreciation a/c (12000+25000+3000)	40,000
			"	By Balance c/d (26000+206250+26250)	2,58,500
		2,98,500			2,98,500

2012			2013		
1 April	To Balance b/d (26000+206250+ 26250)	2,58,500	31 Mar.	By Depreciation (12000+25000+3000)	40,000
			"	By Balance c/d (14000+181250+23250)	2,18,500
		2,58,500			2,58,500
2013			2014		
1 April	To Balance b/d (14,000+1,81,250+ 23,250)	2,18,500	31 Mar.	By Depreciation a/c (12000+25000+3000)	40,000
			"	By Balance c/d	1,78,500
		2,18,500			2,18,500
2014			2014		
1 April	To Balance b/d (2,000+1,56,250 +20,250)	1,78,500	1 April	By Bank a/c	20,000
			1 April	By P & L a/c (Loss)	1,36,250
1 Aug.	To Bank a/c	80,000	2015		
			31 Mar.	By Depreciation a/c (2,000+3,000+5,333)	10,333
		2,58,500	31 Mar.	By Balance c/d (17,250+74,667)	91,917
					2,58,500

प्रश्न 9 केरिज ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने 1 अप्रैल, 2011 को 2,00,000 ₹ प्रति ट्रक से 5 ट्रक खरीदे। कम्पनी 20% वार्षिक से मूल लागत पर हास लगाती है तथा लेखा पुस्तकों को प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द करती है। 1 अक्टूबर, 2013 को एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त होकर पूरी तरह से नष्ट हो गया। बीमा कम्पनी दावे को पूरा चुकता करते हुए 70,000 ₹ देने को सहमत हुई। उसी तिथि को कम्पनी ने 1,00,000 ₹ में एक और पुराना ट्रक खरीदा तथा उसके कायाकल्प पर 20,000 ₹ व्यय किये। 31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त हो रहे तीन वर्षों के लिए ट्रक खाता एवं ट्रक पर हास प्रावधान खाता बनाइए। यदि ट्रक निपटान खाता बनाया जा रहा हो तो ट्रक खाता भी बनाइए।

उत्तर -

ट्रक खाता (Trucks A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011			2011		
1 April	To Bank	10,00,000	31 Dec.	By Balance c/d	10,00,000
		10,00,000			10,00,000

2012			2012		
1 Jan.	To Balance b/d	10,00,000	31 Dec.	By Balance c/d	10,00,000
		10,00,000			10,00,000
2013			2013		
1 Jan.	To Balance b/d	10,00,000	1 Oct.	By Truck Disposal A/c	2,00,000
1 Oct.	To Bank (Cost)	1,00,000	31 Dec.	By Balance c/d	9,20,000
	To Bank (Repair)	20,000			
		11,20,000			11,20,000

हास आयोजन खाता (Provision for Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011			2011		
31 Dec.	To Balance c/d	1,50,000	31 Dec.	By Depreciation	1,50,000
		1,50,000			1,50,000
2012			2012		
31 Dec.	To Balance c/d	3,50,000	1 Jan.	By Balance b/d	1,50,000
		3,50,000	31 Dec.	By Depreciation A/c	2,00,000
2013			2013		
1 Oct.	To Truck Disposal	1,00,000	1 Jan.	By Balance b/d	3,50,000
31 Dec.	To Balance c/d	4,46,000	1 Oct.	By Depreciation	30,000
		5,46,000	31 Dec.	By Depreciation (1,60,000+6,000)	1,66,000
					5,46,000

ट्रक निपटान खाता (Truck Disposal Account)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2013			2013		
1 Oct.	To Truck A/c	2,00,000	1 Oct.	By Provision for Depreciation	1,00,000
			"	By Bank A/c	70,000
			"	By Profit & Loss	30,000
		2,00,000			2,00,000

प्रश्न 10 सरस्वती लि. ने 1 जनवरी, 2011 को 10,00,000 ₹ की लागत की एक मशीन खरीदी। 1 मई, 2012 को 15,00,000 ₹ में तथा 1 जुलाई, 2014 को 12,00,000 ₹ में दूसरी नई मशीन खरीदी। मशीन के एक भाग, जिसकी मूल लागत, वर्ष 2011 में 2,00,000 ₹ थी, को 30 अप्रैल,

2014 को 75,000 ₹ में बेच दिया। 2011 से 2015 तक के मशीन खाता, मशीन पर हास प्रावधान खाता एवं मशीन निपटान खाता बनाइए। यदि हास 10% वार्षिक दर से सीधी रेखा पर लगाया गया हो तथा खाते प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द होते हों।

उत्तर -

**मशीन खाता
(Machinery A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011 1 Jan.	To Bank	10,00,000	2011 31 Dec.	By Balance c/d	10,00,000
		10,00,000			10,00,000
2012 1 Jan.	To Balance b/d	10,00,000	2012 31 Dec.	By Balance c/d	25,00,000
1 May	To Bank	15,00,000			
		25,00,000			25,00,000
2013 1 Jan.	To Balance b/d	25,00,000	2013 31 Dec.	By Balance c/d	25,00,000
		25,00,000			25,00,000
2014 1 Jan.	To Balance b/d	25,00,000	2014 30 April	By Machinery Disposal A/c	2,00,000
1 July	To Bank	12,00,000	31 Dec.	By Balance c/d	35,00,000
		37,00,000			37,00,000
2015 1 Jan.	To Balance b/d	35,00,000	2015 31 Dec.	By Balance c/d	35,00,000
		35,00,000			35,00,000

**मशीन निपटान खाता
(Machine Disposal Account)**

तिथि (Date)	विवरण (Particulars)	राशि (Amount)	तिथि (Date)	विवरण (Particulars)	राशि (Amount)
2014 30 April	To Machinery A/c	2,00,000	2014 30 April	By Bank (Sale)	75,000
			"	By Provision for Dep.	66,667
			"	By Profit & Loss A/c (Loss)	58,333
		2,00,000			2,00,000

प्रश्न 11 1 जुलाई, 2011 को अश्विनी ने 2,00,000 ₹ में एक उधार मशीन खरीदी जिस पर 25,000 ₹ का व्यय बैंक से भुगतान किये। मशीन का सम्भावित जीवन 5 वर्ष तथा पाँच वर्ष पश्चात् अवशिष्ट मूल्य 20,000 ₹ आँका गया। हास सीधी रेखा पद्धति से लगाना है। वर्ष 2011 में रोजनामचा प्रविष्टि करें एवं प्रथम तीन वर्ष के आवश्यक खाते बनाएँ।

उत्तर -

$$\text{मूल्य हास} = \frac{\text{कुल लागत - अवशिष्ट मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का जीवन काल}}$$

$$= \frac{2,00,000 + 25,000 - 20,000}{5} = \frac{2,05,000}{5} = 41,000$$

Journal Entries

Date	Particulars	L. F.	Amount	
			Debit (₹)	Credit (₹)
2011 1 July	Machinery A/c Dr. To Supplier's A/c (Machinery purchased on credit)		2,00,000	2,00,000
1 July	Machinery A/c Dr. To Bank (Installation exp. paid)		25,000	25,000
31 Dec.	Depreciation A/c Dr. To Machinery A/c (Depreciation charged for 6 months)		20,500	20,500
31 Dec.	Profit & Loss A/c Dr. To Depreciation A/c (Dep. transferred to P & L a/c)		20,500	20,500

LEDGER

मशीन खाता (Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011 1 July	To Supplier	2,00,000	2011 31 Dec.	By Depreciation	20,500
"	To Bank	25,000	"	By Balance c/d	2,04,500
		2,25,000			2,25,000
2012 1 Jan.	To Balance b/d	2,04,500	2012 31 Dec.	By Depreciation	41,000
		2,04,500	"	By Balance c/d	1,63,500
		2,04,500			2,04,500
2013 1 Jan.	To Balance b/d	1,63,500	2013 31 Dec.	By Depreciation	41,000
		1,63,500	"	By Balance c/d	1,22,500
		1,63,500			1,63,500

 हास खाता
(Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011 31 Dec.	To Machinery A/c	20,500	2011 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	20,500
		20,500			20,500
2012 31 Dec.	To Machinery A/c	41,000	2012 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	41,000
		41,000			41,000
2013 31 Dec.	To Machinery A/c	41,000	2013 31 Dec.	By Profit & Loss A/c	41,000
		41,000			41,000

 ट्रक खाता
(Truck A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2010 1 Oct.	To Bank	8,00,000	2011 31 Mar.	By Depreciation	60,000
		8,00,000	"	By Balance c/d	7,40,000
		8,00,000			8,00,000
2011 1 April	To Balance b/d	7,40,000	2012 31 Mar.	By Depreciation	1,11,000
		7,40,000	"	By Balance c/d	6,29,000
		7,40,000			7,40,000

2012 1 April	To Balance b/d	6,29,000	2013 31 Mar.	By Depreciation	94,350
			"	By Balance c/d	5,34,650
		<u>6,29,000</u>			<u>6,29,000</u>
2013 1 April	To Balance b/d	5,34,650	2013 31 Dec.	By Depreciation	60,148
31 Dec.	To P & L A/c (Profit)	25,498	"	By Bank A/c	5,00,000
		<u>5,60,148</u>			<u>5,60,148</u>

प्रश्न 13 कपिल लि. ने 01 जुलाई, 2011 को 3,50,000 ₹ की एक मशीन खरीदी। 01 अप्रैल, 2012 एवं 01 अक्टूबर, 2012 को इसने क्रमशः 1,50,000 ₹ तथा 1,00,000 ₹ की दो और मशीनें खरीदी। हास 10% वार्षिक से सीधी रेखा विधि से लगाना है। 01 जनवरी, 2013 को तकनीक में परिवर्तन के कारण पहली मशीन अनुपयोगी हो गई। इस मशीन को 1,00,000 ₹ में बेच दिया गया। कलेंडर वर्ष के आधार पर प्रथम चार वर्ष के लिए मशीन खाता बनाइए।

उत्तर -

**मशीन खाता
(Machinery A/c)**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011 1 July	To Bank (i)	3,50,000	2011 31 Dec.	By Depreciation	17,500
			"	By Balance c/d	3,32,500
		<u>3,50,000</u>			<u>3,50,000</u>
2012 1 Jan.	To Balance b/d	3,32,500	2012 31 Dec.	By Depreciation (35000+11250+2500)	48,750
1 April	To Bank (ii)	1,50,000	"	By Balance c/d (297500+138750+97500)	5,33,750
1 Oct.	To Bank (iii)	1,00,000			<u>5,82,500</u>
		<u>5,82,500</u>			
2013 1 Jan.	To Balance b/d (297500+138750+97500)	5,33,750	2013 1 Jan.	By Bank	1,00,000
			"	By Profit & Loss	1,97,500
			31 Dec.	By Depreciation (15000 + 10000)	25,000
			"	By Balance c/d (123750+87500)	2,11,250

2014		5,33,750	2014		5,33,750
1 Jan.	To Balance b/d (123750+87500)	2,11,250	31 Dec.	By Depreciation (15000+10000)	25,000
			"	By Balance c/d (108750+77500)	1,86,250
		2,11,250			2,11,250

प्रश्न 14 सतकार ट्रांसपोर्ट लि. ने 10,00,000 ₹ प्रति बस के हिसाब से 01 जनवरी, 2011 को तीन बसें खरीदीं। 01 जुलाई, 2013 को एक बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई तथा पूरी तरह से नष्ट हो गई। बीमा कम्पनी से हिसाब चुकता के एवज में 7,00,000 ₹ प्राप्त हुए। हास 15% वार्षिक से क्रमागत पद्धति से लगाया जाना है। 2011 से 2014 तक का बस खाता बनाइए। लेखा पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द की जाती हैं।

उत्तर -

बस खाता
(Buses A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011			2011		
1 Jan.	To Bank	30,00,000	31 Dec.	By Depreciation	4,50,000
			"	By Balance c/d	25,50,000
		30,00,000			30,00,000
2012			2012		
1 Jan.	To Balance b/d	25,50,000	31 Dec.	By Depreciation	3,82,500
			"	By Balance c/d	21,67,500
		25,50,000			25,50,000
2013			2013		
1 Jan.	To Balance b/d	21,67,500	1 July	By Depreciation (i)	54,188
1 July	To P & L A/c	31,688	"	By Bank (Insurance)	7,00,000
			31 Dec.	By Depreciation (2 Bus)	2,16,750
			"	By Balance c/d	12,28,250
		21,99,188			21,99,188
2014			2014		
1 Jan.	To Balance b/d	12,28,250	31 Dec.	By Depreciation	1,84,238
			"	By Balance c/d	10,44,012
		12,28,250			12,28,250
2015					
1 Jan.	To Balance b/d	10,44,012			

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes) :

लाभ-हानि की गणना

		₹
1 Bus का मूल्य		10,00,000
Less : Depreciation		1,50,000
	Balance	8,50,000
Less : Depreciation		1,27,500
	Balance	7,22,500
Less : Depreciation (6 Months)		54,188
		6,68,312
	Sales Value	7,00,000
	Profit	31,688

प्रश्न 15 जुनेजा ट्रांसपोर्ट ने 1 अक्टूबर, 2011 को 2 ट्रक 10,00,000 ₹ प्रति ट्रक से खरीदे। 01 जुलाई, 2013 को एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया तथा पूरी तरह नष्ट हो गया। हिसाब चुकता करते हुए बीमा कम्पनी से 6,00,000 ₹ प्राप्त हुए। 31 दिसम्बर, 2013 को एक और ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया जो आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुआ। इस ट्रक का बीमा नहीं कराया गया था। इसे 1,50,000 ₹ में बेच दिया गया। 31 जनवरी, 2014 को 5,000 ₹ में एक और ट्रक खरीदा। हास 10% वार्षिक दर से क्रमागत पद्धति से लगाना है। लेखा पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द की जाती हैं। 2011 से 2014 तक का ट्रक खाता बनाइए।

उत्तर -

ट्रक खाता
(Trucks A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2011 1 Oct.	To Bank (10,00,000 + 10,00,000)	20,00,000	2012 31 Mar.	By Depr. (6 Months) (50,000+50,000)	1,00,000
			"	By Balance c/d (9,50,000+9,50,000)	19,00,000
		20,00,000			20,00,000
2012 1 April	To Balance b/d (9,50,000+9,50,000)	19,00,000	2013 31 Mar.	By Depreciation (95,000+95,000)	1,90,000
			"	By Balance c/d (8,55,000+8,55,000)	17,10,000
		19,00,000			19,00,000

2013			2013		
1 April	To Balance b/d		1 July	By Depreciation (3 Months)	21,375
2014	(8,55,000+8,55,000)	17,10,000	"	By Bank	6,00,000
31 Jan.	To Bank	12,00,000	"	By Profit & Loss A/c	2,33,625
			31 Dec.	By Depreciation	64,125
			"	By Bank	1,50,000
			"	By Profit & Loss A/c	6,40,875
			2014		
			31 Mar.	By Depreciation	20,000
			"	By Balance c/d	11,80,000
		29,10,000			29,10,000
2014					
1 April	To Balance b/d	11,80,000			

Working Note :

Loss on 1st Truck = 8,55,000 - 21,375 - 6,00,000 = ₹ 2,33,625

Loss on 2nd Truck = 8,55,000 - 64,125 - 1,50,000 = ₹ 6,40,875

प्रश्न 16 नोयडा की एक भवन निर्माण कम्पनी के पास 5 क्रेनें हैं। 01 अप्रैल, 2017 को इनकी कीमत लेखा पुस्तकों के अनुसार 40,00,000 ₹ है। 1 अक्टूबर, 2017 को इसने एक क्रेन जिसकी 1 अप्रैल, 2017 को कीमत 5,00,000 ₹ थी 10% लाभ पर बेच दी। उसी दिन उसने दो और क्रेन 4,50,000 ₹ प्रति क्रेन खरीद लीं। क्रेन खाता खोलिए। यह अपने खाते 31 मार्च को बन्द करते हैं एवं हास क्रमागत पद्धति पर 10% निकालते हैं।

उत्तर -

क्रेन खाता (Cranes A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017			2017		
1 April	To Balance b/d	40,00,000	1 Oct.	By Depr. (6 Months)	25,000
1 Oct.	To P & L (Profit)	47,500	"	By Bank	5,22,500
1 Oct.	To Bank (450000+450000)	9,00,000	2018		
			31 Mar.	By Depreciation (3,50,000+ 45,000)	3,95,000
			"	By Balance c/d (31,50,000+8,55,000)	40,05,000
		49,47,500			49,47,500
2018					
1 April	To Balance b/d	40,05,000			

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes) :

मशीन का बिक्री मूल्य

		₹
मशीन की राशि (1 Jan., 2017)		5,00,000
Less : मूल्य-हास (6 महीने का)		25,000
	Balance	4,75,000
Add : 10% Profit		47,500
	बेची गई मशीन का मूल्य	5,22,500

प्रश्न 17 श्री कृष्णा मैक्यूफैक्चरिंग कम्पनी ने 01 जुलाई, 2014 को 75,000₹ प्रति मशीन से 10 मशीनें खरीदी। 01 अक्टूबर, 2016 को एक मशीन आग से नष्ट हो गई तथा बीमा कम्पनी ने 45,000 ₹ दावे के स्वीकार किए। इसी तिथि को कम्पनी ने 1,25,000 ₹ में एक दूसरी मशीन खरीद ली। कम्पनी 15% वार्षिक से क्रमागत पद्धति से हास लगा रही है। कम्पनी का वित्तीय वर्ष कैलेंडर वर्ष है। 2014 से 2017 के लिए मशीनरी खाता बनाइए।

उत्तर -

मशीन खाता
(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 1 July	To Bank (75000×10)	7,50,000	2014 31 Dec.	By Depreciation (for 6 months)	56,250
			"	By Balance c/d	6,93,750
		7,50,000			7,50,000
2015 1 Jan.	To Balance b/d	6,93,750	2015 31 Dec.	By Depreciation	1,04,062
			"	By Balance c/d	5,89,688
		6,93,750			6,93,750
2016 1 Jan.	To Balance b/d	5,89,688	2016 1 Oct.	By Depreciation	6,634
1 Oct.	To Bank	1,25,000	"	By Bank (Insurance)	45,000
			"	By P & L (Loss) (58,969 - 6,634 - 45,000)	7,335
			31 Dec.	By Depreciation (79608 + 4687)	84,295
			"	By Balance c/d	5,71,424
		7,14,688			7,14,688
2017 1 Jan.	To Balance b/d	5,71,424	2017 31 Dec.	By Depreciation	85,714
				By Balance c/d	4,85,710
		5,71,424			5,71,424

प्रश्न 18 1 जनवरी, 2014 को एक लिमिटेड कम्पनी ने 20,00,000 ₹ में मशीन खरीदी। हास 15% वार्षिक से क्रमागत पद्धति से लगाया जा रहा है। 01 मार्च, 2016 को मशीन का 1/4 भाग आग से नष्ट हो गया। बीमा कम्पनी से 40,000 ₹ पूरा हिसाब चुकता कर प्राप्त हुए। 01 सितम्बर, 2016 को 15,00,000 ₹ में एक और मशीन खरीदी। 2014 से 2017 तक का मशीन खाता बनाइए। खाते 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं।

उत्तर -

मशीन खाता
(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2014 1 Jan.	To Bank	20,00,000	2014 31 Dec.	By Depreciation	3,00,000
			"	By Balance c/d	17,00,000
		20,00,000			20,00,000
2015 1 Jan.	To Balance b/d	17,00,000	2015 31 Dec.	By Depreciation	2,55,000
			"	By Balance c/d	14,45,000
		17,00,000			17,00,000
2016 1 Jan.	To Balance b/d	14,45,000	2016 1 March	By Depreciation (1/4 Machinery for 2 months)	9,031
1 Sept.	To Bank	15,00,000	"	By Bank (Insurance)	40,000
			"	By Profit & Loss	3,12,219
			31 Dec.	By Depreciation (1,62,563+75,000)	2,37,563
			"	By Balance c/d (9,21,187+14,25,000)	23,46,187
		29,45,000			29,45,000
2017 1 Jan.	To Balance b/d	23,46,187	2017 31 Dec.	By Depreciation	3,51,928
			"	By Balance c/d	19,94,259
		23,46,187			23,46,187

कार्यशील टिप्पणी (Working Note) :

	₹
¼ मशीन का मूल्य 1 जनवरी, 2014 को	5,00,000
Less : 15% मूल्य-हास (5,00,000×15%)	75,000
¼ मशीन का मूल्य 1 जनवरी, 2015 को	4,25,000
Less : 15% मूल्य-हास (4,25,000×15%)	63,750
¼ मशीन का मूल्य 1 जनवरी, 2016 को	3,61,250
Less : 15% मूल्य-हास 2 महीने के लिए $\left(3,61,250 \times 15\% \times \frac{2}{12}\right)$	9,031
¼ मशीन का मूल्य 1 मार्च, 2016 को	3,52,219
बिक्री मूल्य	40,000
बेचने से हानि	3,12,219

प्रश्न 19 1 जुलाई, 2015 को 3,00,000 ₹ की लागत का एक संयन्त्र तथा इसकी स्थापना पर 50,000 ₹ व्यय किये। 15% वार्षिक से सीधी रेखा पद्धति से हास लगाया गया। 01 अक्टूबर, 2017 को संयन्त्र को 1,50,000 ₹ में बेच दिया एवं उसी तिथि को 4,00,000 ₹ की लागत का एक और संयन्त्र लगा दिया जिसमें उसका क्रय मूल्य सम्मिलित है। खाते प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं। तीन वर्ष के लिए मशीनरी खाता एवं हास पर प्रावधान खाता बनाइए।

उत्तर -

मशीन खाता
(Machinery A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 1 July	To Bank (Cost)	3,00,000	2015 31 Dec.	By Balance c/d	3,50,000
"	To Bank (Installation Exp.)	50,000			
		3,50,000			3,50,000
2016 1 Jan.	To Balance b/d	3,50,000	2016 31 Dec.	By Balance c/d	3,50,000
		3,50,000			3,50,000
2017 1 Jan.	To Balance b/d	3,50,000	2017 1 Oct.	By Provision for Depreciation	1,18,125
1 Oct.	To Bank	4,00,000	"	By Bank A/c	1,50,000
			"	By Profit & Loss (Loss)	81,875
			31 Dec.	By Balance c/d	4,00,000
		7,50,000			7,50,000
2018 1 Jan.	To Balance b/d	4,00,000			

हास आयोजन खाता
(Provision for Depreciation A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015 31 Dec.	To Balance c/d	26,250	2015 31 Dec.	By Depreciation	26,250
		26,250			26,250
2016 31 Dec.	To Balance c/d	78,750	2016 1 Jan.	By Balance b/d	26,250
		78,750	31 Dec.	By Depreciation	52,500
		78,750			78,750
2017 1 Oct.	To Machinery A/c	1,18,125	2017 1 Jan.	By Balance b/d	78,750
31 Dec.	To Balance c/d	15,000	1 Oct.	By Depreciation	39,375
		1,33,125	31 Dec.	By Depreciation	15,000
		1,33,125			1,33,125

प्रश्न 20 ताहिलियानी एण्ड संस एन्टरप्राइजेज की लेखा पुस्तकों में 31 दिसम्बर, 2017 को लिये गये तलपट के कुछ अंश इस प्रकार हैं:

खाते का नाम	नाम राशि रुपये	जमा राशि रुपये
विभिन्न देनदार	50,000	
डूबत ऋण	6,000	
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान		4,000

अतिरिक्त सूचना

डूबत ऋण जिनका लेखांकन नहीं किया गया 2,000₹ देनदारों पर 8% से प्रावधान की व्यवस्था करनी है।

डूबत ऋणों को पुस्तकों में से समाप्त करने एवं संदिग्ध ऋण खाते के लिए प्रावधान की व्यवस्था करने के लिए आवश्यक लेखांकन प्रविष्टि कीजिए। आवश्यक खाते भी बनाइए।

उत्तर -

Journal of Tahiliyani & Sons Enterprises

Date	Particulars	L. F.	Amount	
			Debit (₹)	Credit (₹)
2017 Dec. 31	Bad Debts a/c To Sundry Debtors a/c (Being bad debts written off)	Dr.	2,000	2,000
Dec. 31	Provision for Bad Debts a/c To Bad Debts a/c (being total bad debts transferred to Provision for Bad Debts a/c)	Dr.	8,000	8,000
Dec. 31	Profit & Loss a/c To Provision for Bad Debts a/c (Being amount charged from P&L a/c)	Dr.	7,840	7,840

Bad Debts A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 31 Dec.	To Balance b/d	6,000	2017 31 Dec.	By Prov. for Bad Debts	8,000
31 Dec.	To Sundry Debtors a/c	2,000			
		8,000			8,000

Sundry Debtors A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 31 Dec.	To Balance b/d	50,000	2017 31 Dec.	By Bad debts a/c	2,000
			"	By Balance c/d	48,000
		50,000			50,000

Provision for Bad Debts A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2017 31 Dec.	To Bad debts a/c	8,000	2017 31 Dec.	By Balance b/d	4,000
31 Dec.	To Balance c/d (New Prov.)	3,840	31 Dec.	By P & L (Bal. Figure)	7,840
		11,840			11,840

(100)

प्रश्न 21 31 दिसम्बर, 2015 को मै. निशा ट्रेड्स की पपस्तकों के विभिन्न खातों के शेष इस प्रकार थे:

विविध देनदार	80,500
डूबत ऋण	1,000
संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान	5,000

अतिरिक्त सूचनाएँ :

डूबत ऋण 500 रुपये देनदारों पर 2% पर प्रावधान बनाएँ

डूबत ऋण खाता, संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान और लाभ व हानि खाता तैयार करे

उत्तर -

Bad Debts A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
31 Dec.	To Balance b/d	1,000	31 Dec.	By Prov. for Bad Debts a/c	1,500
31 Dec.	To Sundry Debtors a/c	500			
		1,500			1,500

Provision for Bad Debts A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
31 Dec.	To Bad Debts a/c	1,500	31 Dec.	By Balance b/d	5,000
31 Dec.	To P & L a/c	1,900			
31 Dec.	To Balance c/d (2% on Debtors i.e. on ₹ 80,000)	1,600			
		5,000			5,000

Profit & Loss A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
				By Old Provision	5,000
				Less : Bad Debts	1,500
					3,500
				Less : Prov. for Bad Debts.	1,600
					1,900
					1,900